रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05

REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 44] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 4—नवम्बर 10, 2017 (कार्तिक 13, 1939)

No. 44] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 4—NOVEMBER 10, 2017 (KARTIKA 13, 1939)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.	765
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	977
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	11
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	1953
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).	*
भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश.	*
भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	22415
भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस	*
भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	*
भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं.	2763
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस.	1875
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक.	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	765
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	977
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence..................................	11
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1953
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	22415
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	2763
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	1875
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग I— खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 2017

सं. 93-प्रेज/2017—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को असाधारण वीरतापूर्ण कार्यों के लिए 'कीर्ति चक्र' पुरस्कार प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री प्रमोद कुमार, कमांडेंट, 49 बटालियन, के.रि.पु.बल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अगस्त, 2016)

कश्मीर घाटी में राष्ट्रीय महत्व के दिवसों को मनाने में सुरक्षा बलों को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि राष्ट्र-विरोधी ताकतों द्वारा ऐसे अवसरों में बाधा डालने हेतु सभी प्रयास किए जाते हैं। सुरक्षा बलों द्वारा 'हिज्बुल मुजाहिदीन' के कमांडर को मार गिराए जाने के बाद कश्मीर घाटी में कानून व्यवस्था की स्थिति अत्यंत खराब एवं विस्फोटक हो गई थी जिसके कारण स्वतंत्रता दिवस, 2016 के आयोजन का कार्य चुनौतीपूर्ण हो गया था। उग्रवादियों के उपद्रवजनित कार्यों तथा नापाक योजनाओं को रोकने के लिए श्रीनगर शहर में कड़ी चौकसी बरती गई और प्रतिबंध लगाए गए।

परंतु 0800 बजे नौहट्टा चौक, श्रीनगर में एक परित्यक्त इमारत में छुपे हुए उग्रवादियों ने उस क्षेत्र में तैनात 28 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। सामरिक रूप से बेहतर तथा मजबूत स्थिति में होने के कारण् उग्रवादियों द्वारा किए गए इस अचानक एवं अचंभित करने वाले घातक हमले में 07 सुरक्षा कार्मिकों को गोलियां लगीं और वे घायल हो गए। घायल होने के बावजूद, सुरक्षा कार्मिकों ने उपलब्ध कवर लेते हुए उग्रवादियों पर जवाबी फायरिंग की तथा उन्हें बच कर भागने का मौका नहीं दिया। यह मुठभेड़ शहर के बीचोंबीच हुई, जिसके कारण इसकी खबर सभी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बलों के संबंधित कार्यालयों तक पहुंच गई। इस मुठभेड़ के बारे में सुनकर श्री प्रमोद कुमार, कमांडेंट, 49 बटालियन ने तेज़ी से कार्यवाही की और तुरंत ही इसमें फंसे जवानों की सहायता करने तथा उग्रवादियों को मार गिराने के लिए घटनास्थल पर कूच कर गये। इस घटनास्थल पर पहुंचने के बाद उन्होंने भारी गोलीबारी के बीच घायल जवानों को वहां से हटाकर दूसरे जवानों को वहां पर तैनात किया। घायल जवानों को वहां से सुरक्षित निकालने की प्रक्रिया में, वे भारी गोलीबारी की चपेट में आ गए, परंतु वे घायलों को बचाने के क्रम में अपनी गाड़ी को चतुराई से एक घायल से दूसरे घायल तक ले जाते रहे। तदुपरांत, उन्होंने अन्य संक्रिया कमांडरों के साथ मिलकर इस कार्रवाई/वास्तविक परिस्थिति का सामरिक दृष्टि से आकलन किया तथा जिस भवन से उग्रवादी फायर कर रहे थे, उसको चारों ओर से घेर लिया।

एक बार बचकर भागने के सभी मार्ग बंद हो जाने के बाद, श्री प्रमोद कुमार बुलेट-प्रूफ गाड़ी में अपने जवानों के साथ उस भवन के नजदीक पहुंचे तथा भीषण गोलीबारी की लड़ाई में डट गए। उग्रवादी अलग-अलग स्थान बदल रहे थे तथा विभिन्न खिड़कियों से फायरिंग कर रहे थे ताकि उनकी वास्तविक संख्या के बारे में जवानों को पता न चल सके। कंक्रीट की दीवार के पीछे उग्रवादियों ने अपनी पोजीशन बना रखी थी जिसके कारण जवानों द्वारा की गई गोलीबारी अप्रभावी सिद्ध हो रही थी । उग्रवादियों पर घातक हमले करने के लिए समुचित वांछित जगह प्राप्त करने हेतु श्री प्रमोद कुमार अपनी गाड़ी को पूरी दक्षता से गोलियों की बौछार के बीच उस जगह तक ले गए जहां वे उग्रवादियों के छिपने के ठिकाने से बिलकुल नजदीक तक पहुंच गए और जहां से उग्रवादियों के शरीर का निचला भाग साफ नजर आने लगा। इस वांछित पोजीशन को लेने के बाद उन्होंने उग्रवादी के जगह बदलने से पहले ही उसके पैर में गोली मार कर उसे घायल कर दिया। घायल होने के कारण उस उग्रवादी के जगह बदलने की क्षमता जाती रही परंतु उसकी ओर से फायरिंग चलती ही रही। उग्रवादियों को मार गिराने के लिए श्री प्रमोद कुमार ने अत्यंत बहादुरी का निर्णय लिया और अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए और सभी पूर्व सावधानियों को नजरअंदाज करते हुए ऐसी उपयुक्त पोजीशन लेने के लिए गाड़ी से बाहर आए जहां से उग्रवादी के शरीर पर लक्ष्य किया जा सके। लक्ष्य पर गोली साधने के समय इस वीर अधिकारी ने अपने चारों तरफ से होने वाली गोलीबारी की कोई परवाह

न की परंतु इस क्रम में दूसरे उग्रवादी की दृष्टि उन पर पड़ गई। ज्यों ही उन्होंने घायल उग्रवादी के शरीर पर गोली चलाई और उसे और बुरी तरह से घायल कर दिया, वहीं दूसरे उग्रवादी द्वारा चलाई गई गोली उनके सिर में लगी तथा वे बुरी तरह जख्मी हो गए। बहादुर अधिकारी वीरतापूर्वक लड़ते हुए घायल होकर जमीन पर गिर पड़े। उन्हें तुरंत ही 92 आर्मी बेस अस्पताल, बी.बी.कैंट, श्रीनगर ले जाया गया जहां पर उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली तथा राष्ट्र की सेवा में उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

उनको वहां से निकालने के बाद, फिर से कार्रवाई शुरू हुई। वहां केवल दूसरा उग्रवादी ही गोलीबारी करता हुआ पाया गया जिसे बाद में सुरक्षा बलों ने मार गिराया। मारे गए उग्रवादियों से दो एके-47 राइफलें तथा 6 मैगजीनें भी बरामद की गईं।

श्री प्रमोद कुमार, कमांडेंट, 49 बटालियन ने असाधारण वीरता, अनुकरणीय साहस तथा अपने कर्तव्य के प्रति उच्चतम समर्पण/कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए इस अभियान में राष्ट्र की सेवा हेतु अपने प्राणों की आहुति दी।

2. श्री चेतन कुमार चीता, कमांडेंट, 45 बटालियन, के.रि.पु. बल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 फरवरी, 2017)

दिनांक 13 फरवरी, 2017 को पुलिस स्टेशन, हाजिन, जिला बांदीपोरा, जम्मू एवं कश्मीर में पैरी मोहल्ला में दो लश्कर-ए-तैयबा, विदेशी आतंकवादियों के मौजूद होने के संबंध में एस.एस.पी., बांदीपोरा से श्री चेतन कुमार चीता कमांडेंट, 45 बटालियन, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल को आसूचना प्राप्त हुई। आसूचना के आधार पर श्री चेतन कुमार चीता, कमांडेंट, 45 बटालियन, सी.आर.पी.एफ., सी.ओ., 13 आर.आर. और एस.डी.पी.ओ., संबल द्वारा संयुक्त रूप से एक संक्रिया की योजना तैयार की गई। यह निर्णय लिया गया कि 13 आर.आर. की टुकड़ी प्रारंभिक तोर पर घेरा डालेगी और कमांडेंट, 45 बटालियन, सी.आर.पी.एफ., सी.ओ., 13 आर.आर. की टुकड़ी के साथ संयुक्त रूप से छिपे हुए आतंकवादियों पर हमला शुरू करेंगे। तदनुसार, दिनांक 14.02.2017 को 0500 बजे श्री चेतन कुमार चीता की समग्र कमान के अंतर्गत 45 बटालियन, सी.आर.पी.एफ. के त्वरित कार्रवाई दल और सी.डी.कंपनी की टुकड़ी द्वारा पैरी मोहल्ला, हाजिन में उन्हें घेरने और तलाशी लेने का अभियान शुरू किया गया।

चूंकि दो विदेशी आतंकवादियों के मौजूद होने की जानकारी बहुत ही विश्वसनीय थी, इसलिए कमांडेंट, 45 बटालियन और सी.ओ., 13 आर.आर. ने यह जांच करने और सुनिश्चित करने का निर्णय लिया कि तीन संदिग्ध लक्षित मकानों पर पूर्णतः घेरा डाल दिया गया है और किसी भी आतंकवादी के बच निकलने की संभावना को दूर करने के लिए सभी संभावित बचने के मार्गों को बंद कर दिया गया है। जब उपर्युक्त टीम घेरे को मजबूत कर रही थी तो आतंकवादी निकट पड़ोस में सुरक्षा बलों की मौजूदगी का आभास लगाकर सतर्क हो गए और संभावित मुठभेड़ के लिए तैयार हो गए। आतंकवादियों ने किसी भी संभावित बच निकलने का रास्ता ढूंढने का प्रयास किया किंतु उन्हें ऐसा कोई रास्ता नहीं मिल सका। आतंकवादियों को कोई विकल्प न मिलने और चारों तरफ से घिर जाने पर उन्होंने सैन्य टुकड़ी का सामना करने का निर्णय लिया। उन्होंने संदिग्ध लक्षित मकान से अंधाधुंध गोलीबारी करना और घेराव दल पर ग्रेनेड फेंकना आरंभ कर दिया। अचानक और अंधाधुंध हमले से टुकड़ी घबरा गई और किसी ओट के पीछे आश्रय लेने के लिए विवश हो गई। इस अवसर का आतंकवादियों ने पूरा लाभ उठाया क्योंकि उन्होंने भीतरी घेरे को तोड़ दिया और पड़ोस के मकान में जाकर घुस गए।

इस आरंभिक बहु-आयामी हमले से सेना के एक अधिकारी समेत चार जवान घायल हो गए। घेराव दल को हुई क्षति और उनके बचाव कार्य की प्रक्रिया में आंतरिक घेराव को बहुत बड़ा झटका लगा। इस स्थिति से निपटने के लिए सी.ओ., 13 आर.आर. ने कमांडेंट, 45 बटालियन, सी.आर.पी.एफ. को घायल जवानों को निकालने और भीतरी घेराव में हो गई कमी को पूरा करने के लिए जवानों को फिर-से वहां तैनात करने के लिए कहा। यह अनुमान लगाकर कि स्थिति अत्यधिक गंभीर हो सकती है और इसके लिए असाधारण कार्रवाई आवश्यक हो सकती है, श्री चेतन कुमार चीता, स्वयं अपने साथियों और आर.आर. की टुकड़ी के साथ घेराव को मजबूत करने और सैन्य बलों को अतिरिक्त जरूरी सहायता पहुंचाने के लिए आगे बढ़े।

श्री चीता ने सामरिक बुद्धिमत्ता और अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए अपनी टीम के साथ लक्षित मकान की ओर युक्तिपूर्वक तरीके से छिप-छिप कर आगे बढ़े और मुठभेड़ तथा गोलीबारी के क्षेत्र में पहुंच गए। संभावित खतरों की उपेक्षा करते हुए श्री चेतन कुमार चीता ने सामने से अपनी टीम का नेतृत्व किया ताकि घायल सैनिकों की वजह से रिक्त हुए स्थान पर स्वयं और अपनी पार्टी को पहुंचा कर उसे भरा जा सके। लक्ष्य की ओर बढ़ते समय श्री चेतन कुमार चीता ने परिसर के अंदर एक घास-फूस के ढेर के पीछे एक आतंकवादी को देखा जो टुकड़ी पर एक दूसरा घातक हमला करने की तैयारी कर रहा था। वह इस बात से पूर्णतः अवगत थे कि वहां दूसरा आतंकवादी भी हो सकता है जिसकी पोजीशन अभी ज्ञात नहीं थी। इस बात की पूर्ण संभावना थी कि अपनी मौजूदा पोजीशन से आतंकवादी पर गोली चलाने से आतंकवादी को उनके स्थान का पता चल जाएगा ओर इससे उनकी सैन्य टुकड़ी की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती थी। एक ही क्षण में, उन्होंने अपनी स्थिति से छलांग लगाई और आगे आने वाले अत्यधिक खतरे की परवाह न करते हुए उन्होंने अपने कर्तव्य को स्वयं से अधिक महत्व देते हुए अपने हथियार से आतंकवादी पर सटीक गोलीबारी शुरू कर दी और घास-फूस के ढेर के पीछे छिपे

आतंकवादी का सफाया करने में कामयाब हुए। इसी बीच टुकड़ी पर एक और घातक हमला शुरू हो गया क्योंकि दूसरा आतंकवादी जो संदिग्ध मकान में छिपा हुआ था, ने श्री चीता और उनकी टीम पर यूबीजीएल गोले फेकते हुए गोलियों की बौछार शुरू कर दी। श्री चेतन कुमार चीता और उनके साथ चल रहे जवान, आर.आर. की टुकड़ी को अनेक गोलियां लगीं और वे गंभीर रूप से घायल हो गए।

गंभीर रूप से घायल श्री चेतन कुमार चीता असाधारण वीरता, अदम्य साहस और अद्भुत नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करते हुए और स्पष्ट रूप से तथा तत्काल मौत के ख़तरे का सामना करने की बहादुरी की भावना का परिचय देते हुए टुकड़ी को जवाबी गोलीबारी करने और अपनी टुकड़ी को और किसी नुकसान से बचाने के लिए आतंकवादी पर खुद गोलीबारी करने लगे। बावजूद इसके, आतंकवादी स्थिति का फायदा उठाकर और स्थानीय लोगों का सहयोग पाकर बच निकलने में कामयाब हो गया। बाद में मारे गए आतंकवादी की पहचान एक खूंखार एलईटी 'ए' श्रेणी के आतंकवादी अबू हारिस के रूप में की गई। सैन्य टुकड़ी ने मारे गए आतंकवादी से 1 एके राइफल, 4 मैगजीनें और 71 गोलाबारूद के राउंड तथा 1 हैंड ग्रेनेड बरामद किये।

ऑपरेशन के दौरान, श्री चेतन कुमार चीता, कमांडेंट ने खूंखार आतंकवादी से अपनी सैन्य टुकड़ी को और नुकसान न होने देने से पहले उसका सफाया करने की कार्रवाई में अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए असाधारण नेतृत्व गुण, अदम्य वीरता और कर्तव्यनिष्ठ साहस का प्रदर्शन किया। दूसरे आतंकवादी से होने वाले खतरे की परवाह न करते हुए और गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वे अपने स्थान पर डटे रहे और फायरिंग करते रहे जिससे कि उस आतंकवादी को भागने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं मिल सका। श्री चेतन कुमार चीता ने शौर्य, निस्वार्थ बलिदान की भावना और उत्कृष्ट नेतृत्व गुण का एक अमिट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

3. 5047602एन हवलदार गिरिस गुरुंग, चौथी बटालियन, प्रथम गोरखा राईफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख़ : 20 मई, 2017)

मई, 2017 में हवलदार गिरिस गुरुंग को जम्मू एवं कश्मीर के कुपवाड़ा ज़िले में खोजी दस्ते के कमांडर के रूप में तैनात किया गया था। जब वे घनी झाड़ियों और वनों के बीच घाटी जैसे स्थान में तलाशी अभियान का नेतृत्व कर रहे थे, इसी बीच इस क्षेत्र में छिपे हुए एक उग्रवादी ने उन पर गोलीबारी प्रारंभ कर दी जिससे उनकी जांघ में गोली लग गई।

बहुत अधिक मात्रा में रक्तस्राव होने के बावजूद गैर-कमीशन प्राप्त अधिकारी ने अपनी टीम के ऊपर आए खतरे को महसूस किया और अपनी सुरक्षा की बिलकुल भी परवाह न करते हुए अपनी एके-47 राइफल से सटीक फायर किया और एक आतंकी को मार गिराया। तत्पश्चात् उन्होंने उस जगह का पता लगाया जहां से एक अन्य आतंकी उनके दल के ऊपर फायरिंग कर रहा था। गंभीर रूप से जख्मी होने के बावजूद अपनी वीरता का परिचय देते हुए उन्होंने उस दिशा में एक हथगोला फेंका और बेहद करीब जाकर उस आतंकवादी पर गोलीबारी करते हुए उसे वहीं ढेर कर दिया परंतु अपने गंभीर और अनेक जख्मों के कारण वह वीरगति को प्राप्त हो गए।

हवलदार गिरिस गुरुंग ने सर्वोच्च बलिदान देने से पहले गोलीबारी के दौरान निःस्वार्थपूर्ण अदम्य साहस और अद्‌वितीय आक्रामक भावना का प्रदर्शन किया।

4. आईसी-73531ए मेजर प्रीतम सिंह कुनवार, चौथी बटालियन, दि गढ़वाल राईफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख़ : 26 मई, 2017)

मेजर प्रीतम ने जम्मू एवं कश्मीर के बारामूला जिले में नियंत्रण रेखा पर अद्भुत कला से विभिन्न गुप्त सूत्रों से जानकारी हासिल कर आतंकवादियों के सीमा पार करने की खबर पुख़्ता की। खराब मौसम में भी उन्होंने साहस बनाए रखा और अपनी जगह को सुनिश्चित करते हुए माइनफील्ड के अंदर सुरक्षित स्थान पर मोर्चा संभाला। इन विषम परिस्थितियों में भी मेजर प्रीतम ने एकाग्रता से फतेह की ओर अपने कदम बढ़ाने शुरू कर दिए थे।

मई, 2017 में छह आतंकवादियों को दूर से देखकर मेजर प्रीतम ने अतिशीघ्र ही उन्हें घेरने का उपाय सोचा जो उनकी अद्भुत कार्यशैली एवं उनके धैर्य का प्रबल प्रमाण देता है। आतंकियों के पूर्ण रूप से 'किलिंग ज़ोन' में आने तक उन्होंने आतंकियों के ऊपर सटीक निशानेबाजी करके उन्हें मार गिराना शुरू किया। अचानक ही दो आतंकी एक बड़े पत्थर के पीछे छिपकर मेजर प्रीतम की टुकड़ी की तरफ भारी गोलीबारी करने लगे। उसी क्षण एक ग्रेनेड उनके बेहद करीब आकर गिरा। अपनी जान की परवाह किए बिना उन्होंने रेंगते हुए दो ग्रेनेड आतंकवादियों की तरफ फेंके और उन्हें ढेर कर दिया। इतनी देर में एक और आतंकी नीचे से कमान अधिकारी के दल की ओर बढ़ने लगा। यह देख कर उन्होंने कमान अधिकारी को सूचित करते हुए अपनी दिशा बदली और एक बार फिर स्फूर्ति के साथ सटीक निशाना लगाते हुए तीसरे आतंकी को ढेर कर दिया।

मेजर प्रीतम सिंह कुनवार ने शत्रु का मुकाबला करने में अनुकरणीय साहस, विषम परिस्थितियों में संकल्प, असाधारण वीरता तथा उच्चतम कोटि के शौर्य और अटूट धैर्य का परिचय दिया।

5. एसएस-43887वाई मेजर डेविड मनलून, नागा रेजिमेंट, 164 इन्फैन्ट्री बटालियन (प्रादेशिक सेना) (होम एंड हर्थ) नागा, (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख़ : 06 जून, 2017)

मेजर डेविड मनलून द्वारा प्राप्त हुई विशिष्ट आसूचना के आधार पर जून, 2017 में उत्तरी नागालैंड में एक संक्रिया आरंभ की गई थी। लगभग 2200 बजे उक्त संक्रिया के दौरान मेजर डेविड मनलून के नेतृत्व में सैन्य दस्ते द्वारा उग्रवादियों के एक समूह के साथ संपर्क स्थापित किया गया था।

तत्काल भीषण गोलीबारी आरंभ हो गई जिसमें उग्रवादियों ने मेजर डेविड मनलून के दल पर ग्रेनेडों से हमले किए जिसमें मेजर डेविड मनलून और तीन अन्य रैंक के कार्मिक घायल हो गए थे। उग्रवादियों की गोलीबारी और ग्रेनेडों के हमले का मुकाबला करते हुए मेजर डेविड मनलून अपनी जान की परवाह किए बिना कार्रवाई के लिए आगे बढ़े और निकट फासले से गोलीबारी करते हुए उग्रवादियों को मार गिराया जिससे उनकी सैन्य टुकड़ी और हताहत होने से बच गई तथा उन्होंने तीन उग्रवादियों का सफाया कर दिया। मेजर डेविड मनलून उसके शीघ्र बाद अपने ज़ख्मों के कारण शहीद हो गए। मारे गए उग्रवादी उल्फा(आई) के कट्टर कार्यकर्ता थे और ऊपरी असम में अनेक वारदातों में शामिल थे।

मेजर डेविड मनलून ने उग्रवादियों का मुकाबला करने में असाधारण व्यक्तिगत बहादुरी और सर्वोच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 94-प्रेज/2017—राष्ट्रपति वीरतापूर्ण कार्यों के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों को "शौर्य चक्र" पुरस्कार प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट (आईआरएलए : 9056), केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 जनवरी, 2016)

पुलिस स्टेशन, ढीबरा और डुमरिया, जिला औरंगाबाद और गया के अंतर्गत भलुआही, गोपालडेरा, मोरमा, कचनार, छुचिया और दुलारे गांव के जंगली क्षेत्र में ऑपरेशन चलाने की योजना बनाई गई क्योंकि उस क्षेत्र में माओवादियों के एक ग्रुप के मौजूद होने की सूचना प्राप्त हुई थी। इस संक्रिया की योजना श्री रबीश कुमार सिंह, कमांडेंट, 205 कोबरा द्वारा बड़ी बुद्धिमत्ता से तैयार की गई थी और इस सतर्कतापूर्ण संक्रिया की सफलता सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय पुलिस की एक छोटी टुकड़ी के साथ मिलकर श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान के अंतर्गत एक टीम और श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट की कमान के अंतर्गत दूसरी टीम दिनांक 07.01.2016 को उस क्षेत्र की ओर रवाना की गई।

माओवादियों के संभावित स्थान के बारे में अद्यतन सूचना एकत्र करने के पश्चात इन टीमों ने रात के अंधेरे में भलुहाई कैंप से प्रस्थान किया। माओवादियों की पूर्व सूचना प्रणाली को भनक न लगने देने के लिए, दोनों टीमें अत्यंत गोपनीयता और औचकपन को बरकरार रखते हुए लक्षित क्षेत्र की ओर अंधेरे में और घने जंगली क्षेत्र से होकर आगे बढ़ी। सुबह की पहली किरण के साथ इन टीमों ने जंगल की तलाशी शुरू की लेकिन माओवादियों के बारे में कोई भी सूचना प्राप्त नहीं हो सकी। पूरे दिन शत्रु की तलाश करने के पश्चात, इन टीमों ने एक सामरिक मोर्चे में रहकर विश्राम किया और आसपास होने वाली गतिविधियों पर नजर बनाए रखी । इन टीमों की रणनीति आशानुरूप सफल हुई जब इन्होंने करीब 1715 बजे समीपस्थ पहाड़ी क्षेत्र में धुंआ उठते देखा। श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट ने माओवादियों के मौजूद होने की संभावना का अनुमान लगाते हुए अपने कनिष्ठ कमांडरों को फील्ड सिग्नलों के जरिए तत्काल बुलाया और संदिग्ध क्षेत्र को चारों तरफ से घेरने और हमला करने की योजना तैयार की।

योजना के अनुसार, श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट ने उत्तरी दिशा की ओर से क्षेत्र को घेरने के लिए एक छोटी टीम का नेतृत्व किया, वहीं दूसरी छोटी टुकड़ी दक्षिणी दिशा से कवर करने के लिए आगे बढ़ी, जबकि श्री चंदन कुमार दक्षिणी पश्चिमी दिशा की ओर से इंट्रीपिड ट्रूपर्स की एक छोटी टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए आगे बढ़े। माओवादियों की रणनीतिक पोजीशन ही केवल टुकड़ियों के लिए एक कठिनाई नहीं थी बल्कि ढ़लते हुए दिन में उजाला कम होते जाने की वजह से निर्धारित समय में वहां पहुंचना भी आवश्यक था। श्री चंदन कुमार ने अंधेरे का फायदा उठाकर माओवादियों के बच निकलने की संभावना को देखते हुए अपनी टुकड़ी को पहाड़ी की चोटी पर जल्दी पहुंचने का सिग्नल दिया। किंतु माओवादी भी क्षेत्र में किसी मामूली संदिग्ध आवांछित मौजूदगी की भनक लगते ही जवाबी

गोलाबारी करने के लिए तैयार थे। दिन का उजाला कम होते जाने की वजह से टुकड़ी का जल्दी-जल्दी चलना भी, उस क्षेत्र में उनकी मौजूदगी का आभास करा सकता था और जैसा कि आशंका थी माओवादियों को श्री चंदन कुमार की टीम का आभास होते ही, उन्होंने उन पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। यह एक ऐसा विकट क्षण था जिसमें हताहत होने का गंभीर खतरा था, जब श्री चंदन कुमार ने शत्रु की ओर से आ रही गोलियों की परवाह न करते हुए शत्रु की गोलीबारी के ठीक सामने मुकाबले के लिए आगे बढ़ने का निर्णय लिया।

आगे बढ़ते ही हैड कांस्टेबल नगेन्द्र प्रसाद के कंधे पर गोली लगी और वे घायल हो गए। किंतु श्री चंदन कुमार ने अपनी सैन्य टुकड़ी को दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने का सिग्नल दिया। जैसे ही टीम शत्रु की पोजीशन की तरफ आगे बढ़ी, श्री चंदन कुमार और कांस्टेबल अमर नाथ मिश्रा संतरी पोस्ट के सामने पहुंच गए। अत्यधिक निकट से सैन्य टुकड़ी के पहुंचने से पोस्ट के अंदर मौजूद दोनों आतंकवादियों के होश उड़ गए। उस क्षेत्र से बच निकलने के लिए उन्होंने कमांडर और उनके साथियों पर भारी और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी ताकि उन्हें वहीं पर रोका जा सके और वे वहां से भागने में कामयाब हो सकें। किंतु वे दोनों उन पर की जा रही गोलीबारी की परवाह न करते हुए अभूतपूर्व और निर्भीकता से साहसपूर्वक आगे बढ़ते रहे और आतंकवादियों के अत्यंत निकट पहुंचकर उन्हें मार गिराया। माओवादियों ने इसके बदले की कार्रवाई में अपनी ओर से भीषण गोलीबारी और उसके साथ ग्रेनेड फेंकना भी शुरू कर दिया ताकि टुकड़ी को आगे बढ़ने से रोका जा सके और वहां से सुरक्षित निकला जा सके। इन्होंने पीछे की दूसरी टीम को सामने से शत्रु की पोजीशन की ओर आगे बढ़ने और गोली-बारी करने का आदेश दिया, हालांकि उनकी अपनी छोटी टुकड़ी शत्रु की पोजीशन के अत्यधिक निकट थी। माओवादी स्वयं को दोनों तरफ से आगे बढ़ती सैन्य टुकड़ियों से घिरा जानकर छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त हो गए और अपनी-अपनी बंदूकों से भीषण गोलीबारी करते हुए अलग-अलग दिशाओं में भागने का प्रयास किया ।

पूरी हिम्मत रखते हुए श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट और श्री अमरनाथ मिश्रा, कांस्टेबल, सीआरपीएफ आगे बढ़ते रहे और भारी गोलीबारी और अपर्याप्त सुरक्षा कवर की परवाह न करते हुए सामने डट गए। उनका जीवन पुनः गंभीर खतरे की स्थिति में आ गया जब दो माओवादी उन पर भीषण गोलीबारी करते हुए उनकी ही दिशा की ओर भागने लगे। किंतु दोनों ने उन पर की जा रही गोलीबारी की परवाह न करते हुए तुरंत जवाबी कार्रवाई की और इधर-उधर कूद गए और जवाबी गोलीबारी करके माओवादियों को घायल कर दिया। घायल माओवादी ने अपनी दिशा बदल ली और वापस घने जंगल की ओर भाग गए।

यह भीषण गोलीबारी उस समय तक चलती रही जब तक किउस क्षेत्र में पूर्णतः अंधेरा नहीं हो गया। सैन्य टुकड़ियां उस क्षेत्र में पूरी रात पोजीशन लेकर बैठी रहीं और सुबह उस क्षेत्र की सघन तलाशी की कार्रवाई शुरू की गई जिसमें चार माओवादी 1. राजीव यादव उर्फ बिहारी (क्षेत्रीय समिति सदस्य) 2. राम रतन यादव उर्फ जगदीश जी उर्फ जयंत यादव (क्षेत्रीय कमांडर) 3. देवकी भारती (एरिया कमांडर) 4. वीरेन्द्र उर्फ रविन्द्र भोक्ता (फाइटर मेंबर) के शव और एक ए.के 47 राइफल एक कारबाईन, एक .303 राइफल, एक देसी बंदूक, 299 गोलाबारूद के राउंड, 6 मैगजीनें, 3 केन बंब, 40 डिटोनेटर, 2 वायरलेस सेट और अन्य दोष सिद्ध करने वाले दस्तावेज एवं कैंपिंग सामग्री बरामद किए गए।

श्री चंदन कुमार ने माओवादियों के विरूद्ध त्वरित संक्रिया के दौरान अनुकरणीय साहस, नेतृत्व गुणवत्ता और कर्तव्य के प्रति निस्वार्थ निष्ठा का प्रदर्शन किया।

2. श्री अमर नाथ मिश्रा, कांस्टेबल, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 जनवरी, 2016)

पुलिस स्टेशन, ढीबरा और डुमरिया, जिला औरंगाबाद और गया के अंतर्गत भलुआही, गोपालडेरा, मोरमा, कचनार, छुचिया और दुलारे गांव के जंगली क्षेत्र में ऑपरेशन चलाने की योजना बनाई गई क्योंकि उस क्षेत्र में माओवादियों के एक ग्रुप के मौजूद होने की सूचना प्राप्त हुई थी। इस संक्रिया की योजना श्री रबीश कुमार सिंह, कमांडेंट, 205 कोबरा द्वारा बड़ी बुद्धिमत्ता से तैयार की गई थी और इस सतर्कतापूर्ण संक्रिया की सफलता सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय पुलिस की एक छोटी टुकड़ी के साथ मिलकर श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान के अंतर्गत एक टीम और श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट की कमान के अंतर्गत दूसरी टीम दिनांक 07.01.2016 को उस क्षेत्र की ओर रवाना की गई।

माओवादियों के संभावित स्थान के बारे में अद्यतन सूचना एकत्र करने के पश्चात इन टीमों ने रात के अंधेरे में भलुहाई कैंप से प्रस्थान किया। माओवादियों की पूर्व सूचना प्रणाली को भनक न लगने देने के लिए, दोनों टीमें अत्यंत गोपनीयता और औचकपन को बरकरार रखते हुए लक्षित क्षेत्र की ओर अंधेरे में और घने जंगली क्षेत्र से होकर आगे बढ़ी। सुबह की पहली किरण के साथ इन टीमों ने जंगल की तलाशी शुरू की लेकिन माओवादियों के बारे में कोई भी सूचना प्राप्त नहीं हो सकी। पूरे दिन शत्रु की तलाश करने के पश्चात, इन टीमों ने एक सामरिक मोर्चे में रहकर विश्राम किया और आसपास होने वाली गतिविधियों पर नजर बनाए रखी। इन टीमों की रणनीति आशानुरूप सफल हुई जब इन्होंने करीब 1715 बजे समीपस्थ पहाड़ी क्षेत्र में धुंआ उठते देखा। श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट ने

माओवादियों के मौजूद होने की संभावना का अनुमान लगाते हुए अपने कनिष्ठ कमांडरों को फील्ड सिग्नलों के जरिए तत्काल बुलाया और संदिग्ध क्षेत्र को चारों तरफ से घेरने और हमला करने की योजना तैयार की।

योजना के अनुसार, श्री गुफरान अहमद, सहायक कमांडेंट ने उत्तरी दिशा की ओर से क्षेत्र को घेरने के लिए एक छोटी टीम का नेतृत्व किया, वहीं दूसरी छोटी टुकड़ी दक्षिणी दिशा से कवर करने के लिए आगे बढ़ी, जबकि श्री चंदन कुमार दक्षिणी पश्चिमी दिशा की ओर से इंट्रीपिड ट्रूपर्स की एक छोटी टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए आगे बढ़े। माओवादियों की रणनीतिक पोजीशन ही केवल टुकड़ियों के लिए एक कठिनाई नहीं थी बल्कि ढ़लते हुए दिन में उजाला कम होते जाने की वजह से निर्धारित समय में वहां पहुंचना भी आवश्यक था। श्री चंदन कुमार ने अंधेरे का फायदा उठाकर माओवादियों के बच निकलने की संभावना को देखते हुए अपनी टुकड़ी को पहाड़ी की चोटी पर जल्दी पहुंचने का सिग्नल दिया। किंतु माओवादी भी क्षेत्र में किसी मामूली संदिग्ध आवांछित मौजूदगी की भनक लगते ही जवाबी गोलाबारी करने के लिए तैयार थे। दिन का उजाला कम होते जाने की वजह से टुकड़ी का जल्दी-जल्दी चलना भी, उस क्षेत्र में उनकी मौजूदगी का आभास करा सकता था और जैसा कि आशंका थी माओवादियों को श्री चंदन कुमार की टीम का आभास होते ही, उन्होंने उन पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। यह एक ऐसा विकट क्षण था जिसमें हताहत होने का गंभीर खतरा था, जब श्री चंदन कुमार ने शत्रु की ओर से आ रही गोलियों की परवाह न करते हुए शत्रु की गोलीबारी के ठीक सामने मुकाबले के लिए आगे बढ़ने का निर्णय लिया।

आगे बढ़ते ही हैड कांस्टेबल नगेन्द्र प्रसाद के कंधे पर गोली लगी और वे घायल हो गए। किंतु श्री चंदन कुमार ने अपनी सैन्य टुकड़ी को दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने का सिग्नल दिया। जैसे ही टीम शत्रु की पोजीशन की तरफ आगे बढ़ी, श्री चंदन कुमार और कांस्टेबल अमर नाथ मिश्रा संतरी पोस्ट के सामने पहुंच गए। अत्यधिक निकट से सैन्य टुकड़ी के पहुंचने से पोस्ट के अंदर मौजूद दोनों आतंकवादियों के होश उड़ गए। उस क्षेत्र से बच निकलने के लिए उन्होंने कमांडर और उनके साथियों पर भारी और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी ताकि उन्हें वहीं पर रोका जा सके और वे वहां से भागने में कामयाब हो सकें। किंतु वे दोनों उन पर की जा रही गोलीबारी की परवाह न करते हुए अभूतपूर्व और निर्भीकता से साहसपूर्वक आगे बढ़ते रहे और आतंकवादियों के अत्यंत निकट पहुंचकर उन्हें मार गिराया। माओवादियों ने इसके बदले की कार्रवाई में अपनी ओर से भीषण गोलीबारी और उसके साथ ग्रेनेड फेंकना भी शुरू कर दिया ताकि टुकड़ी को आगे बढ़ने से रोका जा सके और वहां से सुरक्षित निकला जा सके। इन्होंने पीछे की दूसरी टीम को सामने से शत्रु की पोजीशन की ओर आगे बढ़ने और गोली-बारी करने का आदेश दिया, हालांकि उनकी अपनी छोटी टुकड़ी शत्रु की पोजीशन के अत्यधिक निकट थी। माओवादी स्वयं को दोनों तरफ से आगे बढ़ती सैन्य टुकड़ियों से घिरा जानकर छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त हो गए और अपनी-अपनी बंदूकों से भीषण गोलीबारी करते हुए अलग-अलग दिशाओं में भागने का प्रयास किया।

पूरी हिम्मत रखते हुए श्री चंदन कुमार, सहायक कमांडेंट और श्री अमरनाथ मिश्रा, कांस्टेबल, सीआरपीएफ आगे बढ़ते रहे और भारी गोलीबारी और अपर्याप्त सुरक्षा कवर की परवाह न करते हुए सामने डट गए। उनका जीवन पुनः गंभीर खतरे की स्थिति में आ गया जब दो माओवादी उन पर भीषण गोलीबारी करते हुए उनकी ही दिशा की ओर भागने लगे। किंतु दोनों ने उन पर की जा रही गोलीबारी की परवाह न करते हुए तुरंत जवाबी कार्रवाई की और इधर-उधर कूद गए और जवाबी गोलीबारी करके माओवादियों को घायल कर दिया। घायल माओवादी ने अपनी दिशा बदल ली और वापस घने जंगल की ओर भाग गए।

यह भीषण गोलीबारी उस समय तक चलती रही जब तक कि उस क्षेत्र में पूर्णतः अंधेरा नहीं हो गया। सैन्य टुकड़ियां उस क्षेत्र में पूरी रात पोजीशन लेकर बैठी रहीं और सुबह उस क्षेत्र की सघन तलाशी की कार्रवाई शुरू की गई जिसमें चार माओवादी 1. राजीव यादव उर्फ बिहारी (क्षेत्रीय समिति सदस्य) 2. राम रतन यादव उर्फ जगदीश जी उर्फ जयंत यादव (क्षेत्रीय कमांडर) 3. देवकी भारती (एरिया कमांडर) 4. वीरेन्द्र उर्फ रविन्द्र भोक्ता (फाइटर मेंबर) के शव और एक ए.के 47 राइफल एक कारबाईन, एक .303 राइफल, एक देसी बंदूक, 299 गोलाबारूद के राउंड, 6 मैगजीनें, 3 केन बंब, 40 डिटोनेटर, 2 वायरलेस सेट और अन्य दोष सिद्ध करने वाले दस्तावेज एवं कैंपिंग सामग्री बरामद किए गए।

श्री अमरनाथ मिश्रा ने त्वरित माओवादी संक्रिया के दौरान अनुकरणीय साहस, कर्तव्य के प्रति नि:स्वार्थ निष्ठा का प्रदर्शन किया है।

3. 13767992ए लांस नायक कश्मीर सिंह, 17वीं बटालियन, दि जम्मू और कश्मीर राईफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अगस्त, 2016)

अगस्त, 2016 में लांस नायक कश्मीर सिंह, घुसपैठिए आतंकवादियों के खात्मे के लिए तैनात टुकड़ी का हिस्सा थे। टुकड़ी ने दो आतंकवादियों को जम्मू और कश्मीर के बारामुला जिले के क्षेत्र में देखा। उन्होंने अत्यंत समीप जाकर गोलीबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादियों ने लघु हथियारों और बैरल ग्रेनेड लांचर से टुकड़ी पर गोलीबारी की।

गोलीबारी के कारण लान्स नायक कश्मीर सिंह, बुरी तरह जख्मी हो गए। तथापि, अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर अदम्य साहस का परिचय देते हुए सुरक्षित आगे बढ़े तथा उन्होंने आतंकवादियों पर लगातार कारगर गोलीबारी की जिसके फलस्वरूप टुकड़ी के बाकी साथियों को होने वाले नुकसान को रोका जा सका। लान्स नायक कश्मीर सिंह ने अत्यंत कर्तव्यनिष्ठा से आगे बढ़ते हुए, अत्यंत समीप जाकर एक आतंकवादी को मार गिराया। उन्होंने युद्धनीति के तहत एक लाभकारी जगह पर अपने आप को तैनात कर दूसरे आतंकवादी को भागने से रोकने के लिए कारगर गोलीबारी की जिसके फलस्वरूप टुकड़ी के बाकी जवान दूसरी दिशा से आतंकवादी को घेर कर उसका खात्मा करने में सफल हुए।

लांस नायक कश्मीर सिंह ने जख्मी होने के बावजूद उत्कृष्ट कौशल नीति और अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए दो ख़ूंखार आतंकवादियों के खात्मे को सक्रियता से सुनिश्चित किया एवं स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर आतंकवादी हमले की योजना को विफल किया।

4. जेसी-580725एन सूबेदार शबीर अहमद, 17वीं बटालियन, दि जम्मू और कश्मीर राईफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अगस्त, 2016)

अगस्त, 2016 में सूबेदार अहमद को आतंकवादियों की हरकत होने की खबर मिली। इन्होंने तुरंत खबर का विश्लेषण किया, शीघ्र योजना बनाकर घुसपैठ कर रहे आतंकवादियों के खात्मे के लिए अपनी टुकड़ी के साथ बिजली की गति से प्रस्थान किया।

टुकड़ी ने जम्मू और कश्मीर के बारामुला जिले के क्षेत्र में आतंकवादियों को देखकर भारी गोलीबारी की जिसके दौरान आतंकवादियों ने भागने का प्रयास किया। उन्होंने शीघ्रता से ऑपरेशन को नियंत्रण में लेते हुए सभी समीपस्थ पोस्टों को सचेत किया और कारगर युद्धनीति के तहत अपनी टुकड़ी को तैनात किया और निरन्तर प्रत्येक स्टाप पर जाकर उन्होंने आतंकवादियों के बच निकलने के तमाम रास्तों को प्रभावी ढंग से सील करते हुए उनकी स्थिति को पुनः स्थापित किया । 0640 बजे उन्होंने उत्कृष्ट बहादुरी एवं प्रशंसनीय पहल का परिचय देते हुए आतंकवादियों की असरदार गोलीबारी के बीच रेंगते हुए आगे बढ़कर एक आतंकवादी को मार गिराया। इसके पश्चात, उन्होंने युद्धनीति के तहत फायदेमन्द जगह पर अपने आप को तैनात करते हुए दूसरे आतंकवादी पर असरदार गोलीबारी करके उसे मार गिराया।

सूबेदार अहमद ने सराहनीय कार्यकुशल बुद्धि, असाधारण नेतृत्व एवं उत्कृष्ट बहादुरी का प्रदर्शन किया जिसके फलस्वरूप स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर हाईप्रोफाइल आतंकवादी हमले को विफल किया जा सका।

5. जेसी-414170पी नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह, चतुर्थ बटालियन, दि पाराच्यूट रेजिमेन्ट (विशेष बल)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 अगस्त, 2016)

अगस्त, 2016 में, जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के क्षेत्र में घुसपैठरोधी अवरोध प्रणाली में उल्लंघन का पता चलते ही सम्पर्क स्थान पर अतिरिक्त बलों की तत्काल मांग की गई थी। नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह इस दल के उप-कमांडर थे। अगले कुछ दिनों तक ये सैन्य टुकड़ियां आतंकवादियों को उस जगह पर खोजती रहीं। लगभग पांच दिन के बाद तीन आतंकवादियों ने गोला बारूद प्वाईंट पर गोलाबारी की और भाग गए । इस गोलाबारी में तीन जवान गंभीर रूप से घायल हो गए। आतंकवादियों के भागने वाले रास्ते का मुआइना करने के बाद खोजी दल ने उन भाग रहे आतंकवादियों का खात्मा करने के लिए उनका पीछा किया।

इन आतंकवादियों की आवाजाही जंगली क्षेत्र की ओर देखी गई थी। बैख की सर्च के दौरान इन आतंकवादियों ने खोजी दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए भागने की कोशिश की। बिना समय गंवाए और अपनी जान की परवाह न करते हुए, नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह भाग रहे दोनों आतंकवादियों के पीछे दौड़ पडे। नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह उत्कृष्ट युद्धकौशलता को दर्शाते हुए उस चट्टान की तरफ दौड़े जिस के पीछे आतंकवादियों ने आड़ ले रखी थी और अन्धाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। आतंकवादियों ने उनको अपनी तरफ बढ़ता हुआ देख कर उन पर दो ग्रनेड फेंके। नायब सूबेदार सिंह निडर बने रहे और आतंकवादियों की ओर नज़दीक गए। नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह के इस साहसी कदम को देख कर आतंकवादी घबरा गए और वे उनकी तरफ़ अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे। आतंकवादियों की जगह को आंकने के बाद नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह पास में एक और चट्टान जोकि आतंकवादियों की आड़ ली हुई चट्टान से बड़ी थी उस पर चढ़ गए और आतंकवादियों के ठीक ऊपर आ गए और वहां से 05 मीटर दूरी से नजदीकी लडाई में एक आतंकवादी को मार गिराया। नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह के साहसिक कदम को देख कर दूसरे आतंकवादी ने अपनी जगह को बदला और पास की चट्टान के पीछे गया और वहां से उन के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा और उनकी तरफ एक हैण्ड ग्रेनेड फेंका। नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह ने वीरतापूर्ण पहल, अद्वितीय युद्ध कौशलता को दर्शाते हुए आतंकवादी की ओर नजदीक गए और वहां से उसको नजदीकी लड़ाई में मार गिराया।

नायब सूबेदार सुरेन्द्रा सिंह ने अदम्य साहस, निःस्वार्थता, अपनी जान की परवाह न करते हुए निर्भीकता और प्रतिकूल स्थिति तथा मुश्किल भूभाग में देश के प्रति कर्तव्यपरायणता से ऊपर उठकर प्रदर्शन किया।

6. 2616368डब्ल्यू सिपाही वेंकटराव अबोतुला, 8वीं बटालियन, दि मद्रास रेजिमेन्ट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 अक्तूबर, 2016)

अक्तूबर, 2016 में सिपाही वेंकटराव अबोतुला जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में आर्मी कैम्प में रात को संतरी पोस्ट पर तैनात थे।

सुबह के समय, उन्होंने 20 से 25 मीटर की दूरी पर डबल लेयरड पेरीमीटर फेंस के बाहर संवेदनशील गतिविधि को देखा और अपने साथी संतरी सिपाही अजोय सरकार को चौकन्ना किया और उन्होंने भी संवेदनशील गतिविधि को देखकर इसका पुष्टीकरण किया। उन्होंने गार्ड कमाण्डर और बाकी गार्ड जो नजदीकी बंकर में आराम कर रहे थे, को सतर्क किया जबकि सिपाही अजोय सरकार ने संदिग्धों पर कड़ी निगरानी रखी। वे पोस्ट पर वापस आये और उन्होंने कांटेदार फेंस की ओर नजदीक आने का प्रयास करने वाले दोनों संदिग्ध व्यक्तियों को चुनौती दी। चुनौती दिए जाने पर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। धैर्य के साथ आतंकवादियों की गोलीबारी में निर्भीकता से उन्होंने तुरन्त जवाबी अचूक फायर किए और फेंस के बाहर आतंकवादियों को मार गिराया। निरन्तर जवाबी गोलीबारी होती रही और इसमें आतंकवादी गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद भी, आतंकवादियों ने लगातार संतरी पोस्ट पर सटीक गोलीबारी जारी रखी। अपनी जान के गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए, उन्होंने आतंकवादियों पर लूप होल के द्वारा गोलीबारी जारी रखी और एक आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया।

सिपाही वेंकटराव अबोतुला के शौर्य, साहसपूर्ण और त्वरित कार्रवाई से गुप्त हमले को रोका जा सका और जिसके परिणामस्वरूप सभी तीनों विदेशी आतंकवादियों को मार गिराया गया।

7. श्री पी त्रिनाध राव, सहायक असॉल्ट कमांड़र, आंध्र प्रदेश

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 अक्तूबर, 2016)

इस विश्वसनीय सूचना के आधार पर कि आन्ध्र-ओडिशा बार्डर स्पेशल जोनल कमेटी (एओबीएसजेडसी) के बड़ी संख्या में माओवादी सदस्य राज्य के खिलाफ हिंसा फैलाने के इरादे से आंध्र-ओडिशा सीमा (एओबी) के कट-ऑफ क्षेत्र में एकत्र हुए हैं, स्थानीय पुलिस और एसआईबी के प्रतिनिधियों के साथ ग्रेहाउंड्स की तीन असाल्ट यूनिटों को 23.10.2016 को संध्या के समय संक्रिया के लिए तैनात किया गया था। ये दल रास्ते में पड़ने वाले माओवादी बहुल गांवों से होते हुए तथा लैंड माइन्स को पार करते हुए एवं माओवादी घात की आशंका वाले अत्यधिक कठिन और दुर्गम क्षेत्र के रास्ते रातभर 26 कि.मी. पैदल चलकर 24.10.2016 को प्रातः 6 बजे रामगृह गांव की बाहरी सीमा में पहुंचे।

रामगृह गांव की उत्तर दिशा में जंगली क्षेत्र में पहुंचने वाले कमांडो के एकदल को माओवादी संतरियों ने देख लिया था और उन पर स्वचालित तथा अर्द्ध स्वचालित हथियारों से गोलीबारी की गई। भारी तथा लगातार गोलीबारी होने के साये में आ जाने पर भी, ग्रेहाउंड्स दल अपनी जान की परवाह न करते हुए आगे बढ़ा और उस स्थान पर पहुंचा जहां दुश्मन वार कर रहा था। उन्होंने भीषण गन बेटल के बाद दो माओवादियों को मार गिराया और उन्होंने अपने से कई गुणा अधिक होते हुए भी लगभग 60 से 70 माओवादियों को खदेड़ दिया।

सहायक असाल्ट कमान्डर (एएसी 3413) श्री पी त्रिनाध राव ने कमांडो के छोटे से दल के साथ माओवादियों की ओर से हो रही भीषण गोलीबारी के बावजूद नाला पार किया। उन्होंने देखा कि 20-25 माओवादी रामगृह गांव की ओर भाग रहे हैं। उन्होंने और उनके दल ने माओवादियों को आगे बढ़ने से रोका और उन्हें पहाड़ी की ओर वापस खदेड़ दिया। माओवादी पहाड़ी पर चढ़ने लगे और उन्होंने सुरक्षित तथा प्रभावशाली मोर्चा ले लिया। उन्होंने ग्रेहाउंड्स कमांडो पर भारी गोलीबारी की और हथ-गोले फेंके। एएसी श्री पी त्रिनाध राव गोली लगने से घायल हो गए लेकिन निर्भीकता से डटे रहे। उनके नेतृत्व के वास्तविक गुण उस समय उजागर हुए जब उन्होंने अपनी जान को खतरे में डालकर आगे बढ़कर अपने दल का नेतृत्व किया। जब माओवादी चट्टान के पीछे से गोलीबारी कर रहे थे, तब उन्होंने अपने दल के सदस्यों को एक दूसरे को कवर टू कवर देते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने एक छोटे से दल का नेतृत्व किया और दाहिनी ओर पहुंचकर माओवादियों को मार गिराया।

सहायक असाल्ट कमान्डर (एएसी) श्री पी त्रिनाध राव और उनके उप-दल ने तीन माओवादियों को मार गिराया और अन्य माओवादियों को दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी छोर से पहाड़ी से उतरने के लिए मजबूर कर दिया। बाद में मारे गए माओवादियों की पहचान (1) बकुरी वेंकट रमण उर्फ गणेश, विशेष क्षेत्रीय समिति सदस्य (एसजेडसीएम), (2) प्रुधवी उर्फ मुन्ना, जिला समिति सदस्य (डीसीएम) और (3) बुद्री, क्षेत्रीय समिति सदस्य (एसीएम) के रूप में की गई और घटना स्थल से (1) एके-47 राइफल, (1) एसएलआर और (1) पिस्टल बरामद किए गए। एएसी पी त्रिनाध राव द्वारा दिखाए गए अनुकरणीय साहस और सूझबूझ के कारण, अन्य कमांडोज को अपने

को पुनः संगठित करने का समय मिल पाया और उन्होंने पूर्वी और दक्षिणी छोरों पर माओवादियों के निकलने के रास्तों को कवर कर लिया। इसी बीच, वरिष्ठ कमांडो (एससी) 5966 श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव ने यह महसूस किया कि माओवादी पहाड़ी के दक्षिणी और पूर्वी छोरों से बच कर भाग सकते हैं, तो उन्होंने नेतृत्व की भूमिका निभाई और माओवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के चलते तेजी से पहाड़ी के पश्चिमी छोर से पूर्वी छोर की तरफ भागे। उन्होंने अपनी जान जोखिम में पड़ जाने पर ध्यान दिए बिना गहन जंगल के बीच में से 1 कि.मी. का क्षेत्र कवर किया। एस सी श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव पूर्वी छोर पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक दौड़ लगाते रहे और माओवादियों पर गोलियां चलाते रहे ताकि उन पर यह प्रभाव पड़े कि कमांडो हर जगह मौजूद हैं। एस सी श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव और उनके सहयोगियों की तरफ से जवाबी गोलीबारी के कारण माओवादियों को पहाड़ी के दक्षिणी छोर वाले निकलने के रास्ते पर जाने के लिए मजबूर कर दिया गया।

चूंकि जूनियर कमांडो (जेसी) श्री डी सतीश कुमार को उनकी जांघ पर गोली लग गई थी और वह असमर्थ हो गए थे, इसलिए एस सी श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव ने अपने साथी की देखभाल का कार्य जेसी श्री डी. हरी किरण को सौंप दिया और अधिक दृढ़ता के साथ लड़ना जारी रखा और नियंत्रित और सुनियोजित गोलीबारी के जरिए माओवादियों को रोके रखा। जब उन्हें माओवादियों को अधिकतम क्षति पहुंचाने का अवसर प्राप्त हुआ तो उन्होंने अपनी यूबीजीएल से दो गोले दागे। इसके परिणामस्वरूप पांच माओवादी मारे गए और बहुत से अन्य माओवादी घायल हो गए।

बाद में, जब यह मालूम हुआ कि एक ग्रेहाउंड्स कमांडो एससी 8708 श्री मो. अबुबकर की माओवादियों का पीछा करते हुए नाले में कूद जाने के कारण मृत्यु हो गई थी, तो एससी श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव ने दुबारा एक बड़ा जोखिम उठाया और गहरे नाले में कूद गए और श्री मो. अबुबकर के मृत शरीर को शस्त्र सहित बाहर निकाल लाए।

एएसी श्री पी त्रिनाध राव ने असाधारण जिम्मेदारी और वीरता का प्रदर्शन किया और यदि वे समय पर कार्रवाई नहीं करते तो माओवादी पहाड़ी के दूसरी छोर की तरफ से आसानी से भाग सकते थे। उन्होंने अपना व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत किया, अपने दल के सदस्यों में साहस का संचार किया और उन्हें पहाड़ी पर चढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके कार्य पूरी तरह से सामान्य ड्यूटी से भी बढ़ चढ़कर थे।

8. श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्रराव, वरिष्ठ कमांडो (5966), आंध्र प्रदेश

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीख : 24 अक्तूबर, 2016)

इस विश्वसनीय सूचना के आधार पर कि आन्ध्र-ओडिशा बार्डर स्पेशल जोनल कमेटी (एओबीएसजेडसी) के बड़ी संख्या में माओवादी सदस्य राज्य के खिलाफ हिंसा फैलाने के इरादे से आंध्र-ओडिशा सीमा (एओबी) के कट-ऑफ क्षेत्र में एकत्र हुए हैं, स्थानीय पुलिस और एसआईबी के प्रतिनिधियों के साथ ग्रेहाउंड्स की तीन असाल्ट यूनिटों को 23.10.2016 को संध्या के समय संक्रिया के लिए तैनात किया गया। ये दल रास्ते में पड़ने वाले माओवादी बहुल गांवों से होते हुए तथा लैंड माइन्स को पार करते हुए एवं माओवादी हमले की आशंका वाले अत्यधिक कठिन और दुर्गम क्षेत्र के रास्ते रातभर 26 कि.मी. पैदल चलकर 24.10.2016 को प्रातः 6 बजे रामगृह गांव की बाहरी सीमा में पहुंचे।

रामगृह गांव की उत्तर दिशा में जंगली क्षेत्र में पहुंचने वाले कमांडों के एक दल को माओवादी संतरियों ने देख लिया था और उन पर स्वचालित तथा अर्द्ध स्वचालित हथियारों से गोलीबारी की गई। भारी तथा लगातार गोलीबारी होने के साये में आ जाने पर भी, ग्रेहाउंड्स दल अपनी जान की परवाह न करते हुए आगे बढ़ा और उस स्थान पर पहुंचा जहां दुश्मन वार कर रहा था। उन्होंने भीषण गन बेटल के बाद दो माओवादियों को मार गिराया और उन्होंने अपने से कई गुणा अधिक होते हुए भी लगभग 60 से 70 माओवादियों को खदेड़ दिया।

सहायक असाल्ट कमान्डर (एएसी 3413) श्री पी त्रिनाध राव ने कमांडो के छोटे से दल के साथ माओवादियों की ओर से हो रही भीषण गोलीबारी के बावजूद नाला पार किया। उन्होंने देखा कि 20-25 माओवादी रामगृह गांव की ओर भाग रहे हैं। उन्होंने और उनके दल ने माओवादियों को आगे बढ़ने से रोका और उन्हें पहाड़ी की ओर वापस खदेड़ दिया। माओवादी पहाड़ी पर चढ़ने लगे और उन्होंने सुरक्षित तथा प्रभावशाली मोर्चा ले लिया। उन्होंने ग्रेहाउंड्स कमांडो पर भारी गोलीबारी की और हथ-गोले फेंके। एएसी श्री पी त्रिनाध राव गोली लगने से घायल हो गए लेकिन निर्भीकता से डटे रहे। उनके नेतृत्व के वास्तविक गुण उस समय उजागर हुए जब उन्होंने अपनी जान को खतरे में डालकर आगे बढ़कर अपने दल का नेतृत्व किया। जब माओवादी चट्टान के पीछे से गोलीबारी कर रहे थे, तब उन्होंने अपने दल के सदस्यों को एक दूसरे को कवर टू कवर देते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने एक छोटे से दल का नेतृत्व किया और दाहिनी ओर पहुंचकर माओवादियों को मार गिराया।

सहायक असाल्ट कमान्डर (एएसी) श्री पी त्रिनाध राव और उनके उप-दल ने तीन माओवादियों को मार गिराया और अन्य माओवादियों को दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी छोर से पहाड़ी से उतरने के लिए मजबूर कर दिया। बाद में मारे गए माओवादियों की पहचान

(1) बकुरी वेंकट रमण उर्फ गणेश, विशेष क्षेत्रीय समिति सदस्य (एसजेडसीएम), (2) प्रुधवी उर्फ मुन्ना, जिला समिति सदस्य (डीसीएम) और (3) बुद्री, क्षेत्रीय समिति सदस्य (एसीएम) के रूप में की गई और घटना स्थल से (1) एके-47 राइफल, (1) एसएलआर और (1) पिस्टल बरामद किए गए। एएसी पी त्रिनाध राव द्वारा दिखाए गए अनुकरणीय साहस और सूझबूझ के कारण, अन्य कमांडोज को अपने को पुनः संगठित करने का समय मिल पाया और उन्होंने पूर्वी और दक्षिणी छोरों पर माओवादियों के निकलने के रास्तों को कवर कर लिया। इसी बीच, वरिष्ठ कमांडो (एससी) 5966 श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव ने यह महसूस किया कि माओवादी पहाड़ी के दक्षिणी और पूर्वी छोरों से बच कर भाग सकते हैं, तो उन्होंने नेतृत्व की भूमिका निभाई और माओवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के चलते तेजी से पहाड़ी के पश्चिमी छोर से पूर्वी छोर की तरफ भागे। उन्होंने अपनी जान जोखिम में पड़ जाने पर ध्यान दिए बिना गहन जंगल के बीच में से एक कि.मी. का क्षेत्र कवर किया। एस सी श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव पूर्वी छोर पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक दौड़ लगाते रहे और माओवादियों पर गोलियां चलाते रहे ताकि उन पर यह प्रभाव पड़े कि कमांडो हर जगह मौजूद हैं। एस सी श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव और उनके सहयोगियों की तरफ से जवाबी गोलीबारी के कारण माओवादियों को पहाड़ी के दक्षिणी छोर वाले निकलने के रास्ते पर जाने के लिए मजबूर कर दिया गया।

चूंकि जूनियर कमांडो (जेसी) श्री डी सतीश कुमार को उनकी जांघ पर गोली लग गई थी और वह असमर्थ हो गए थे, इसलिए एस सी श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव ने अपने साथी की देखभाल का कार्य जेसी श्री डी. हरी किरण को सौंप दिया और अधिक दृढ़ता के साथ लड़ना जारी रखा और नियंत्रित और सुनियोजित गोलीबारी के जरिए माओवादियों को रोके रखा। जब उन्हें माओवादियों को अधिकतम क्षति पहुंचाने का अवसर प्राप्त हुआ तो उन्होंने अपनी यूबीजीएल से दो गोले दागे। इसके परिणामस्वरूप पांच माओवादी मारे गए और बहुत से अन्य माओवादी घायल हो गए।

बाद में, जब यह मालूम हुआ कि एक ग्रेहाउंड्स कमांडो एससी 8708 श्री मो. अबुबकर की माओवादियों का पीछा करते हुए नाले में कूद जाने के कारण मृत्यु हो गई थी, तो एससी श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव ने दुबारा एक बड़ा जोखिम उठाया और गहरे नाले में कूद गए और श्री मो. अबुबकर के मृत शरीर को शस्त्र सहित बाहर निकाल लाए।

श्री चिक्कम जी वी रामचन्द्र राव ने भारी विषमताओं का सामना करते हुए अद्भुत वीरता का प्रदर्शन किया और सामान्य ड्यूटी से आगे बढ़कर कार्य किया। इन्होंने पहाड़ी के चारों ओर 1 कि.मी. से अधिक का रास्ता कवर किया, जिम्मेदारी संभाली, घायल साथी की देखभाल की और माओवादी हमले को निष्फल करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यदि आप नहीं होते तो माओवादी बचकर भाग सकते थे और अपने घायल संगी-साथियों को भी ले जा सकते थे।

9. 4188533डब्ल्यू नायक चन्द्रा सिंह, कुमाऊँ स्काउट्स, 13वीं बटालियन, दि राष्ट्रीय राईफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीख : 25 नवम्बर, 2016)

नायक चन्द्रा सिंह, नवम्बर, 2016 में जम्मू और कश्मीर के सोपोर जिले में एक गांव में एक घेराबंदी और खोजबीन ऑपरेशन के दौरान स्टाप समूह का हिस्सा थे।

कंपनी ने उस लक्षित घर को घेर लिया जिसमें दो आतंकवादी छिपे हुए थे। आतंकवादियों ने स्टाप दस्ते पर ग्रेनेड़ से हमले के साथ भारी गोलीबारी शुरू कर दी और बचकर भागने का प्रयास किया। एक आतंकवादी उसी दिशा में भागा जिस ओर नायक चन्द्रा सिंह तैनात थे। आतंकवादी ने नायक चन्द्रा सिंह पर ताबडतोड़ गोलियां चलाकर घेराबंदी को तोड़ने का प्रयास किया। इस गोलीबारी में नायक चन्द्रा सिंह के पेट में गोलियां लगने से वे बुरी तरह घायल हो गए। तथापि, नायक चन्द्रा सिंह ने महसूस किया कि यह आतंकवादी उसके साथियों के लिए खतरा प्रस्तुत कर सकता है उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए, आतंकवादी पर गोलियां बरसाना जारी रखा और उसे मार गिराया। इस वीरता, निःस्वार्थ कदम ने अन्य सैनिकों की सुरक्षा के साथ-साथ एक खतरनाक आतंकवादी का खात्मा सुनिश्चित किया। नायक चन्द्रा सिंह ऑपरेशन स्थल पर बाद में जख्मों के कारण शहीद हो गए।

नायक चन्द्रा सिंह ने कर्तव्य निष्ठा से ऊपर उठकर और वीरतापूर्ण कार्य के प्रदर्शन के दौरान अपना सर्वोच्च बलिदान दिया और साहसपूर्ण कार्य का प्रदर्शन किया।

10. एसएस-42717एच मेजर गोसावी कुनाल मुनागीर, तोपखाना रेजिमेन्ट, 166वीं बटालियन, दि मीडियम रेजिमेन्ट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीख : 29 नवम्बर, 2016)

नवम्बर, 2016 में मेजर गोसावी कुनाल मुनागीर ने जम्मू और कश्मीर के नगरोटा जिले में स्थित सेना बेस में हुए आतंकवादी हमले में तुरंत प्रतिक्रिया करते हुएअ पनी त्वरित कार्रवाई टीम का नेतृत्व किया। घटनास्थल पर पहुंचने पर उन्हें दो मंजिला इमारत में दो सैन्य अधिकारियों सहित एक पांच माह की गर्भवती महिला अधिकारी के फंसे होने की जानकारी मिली। उन्होंने आतंकवादियों द्वारा की

जा रही भारी गोली-बारी के बीच अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए तथा अदम्य साहस का परिचय देते हुए तुरंत अपनी टीम को तैनात किया और अधिकारियों को निकालने लगे।

आतंकवादियों द्वारा भारी गोली-बारी किए जाने के बावजूद अधिकारी उस क्षेत्र के बिल्कुल नज़दीक पहुंच गए और सफलतापूर्वक दोनों अधिकारियों, एक घायल कनिष्ठ कमीशन प्राप्त अधिकारी और तीन अन्य रैंकों को बचाया।

बहुत नजदीक से होने वाली भारी गोली-बारी में ये गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद वे आतंकवादियों पर तब तक गोली-बारी करते रहे जब तक उन्हें निष्क्रिय नहीं कर दिया। जब उन्हें निकाला जा रहा था, तब भी वे लगातार आतंकवादियों की अवस्थिति की सूचना देते रहे। वे घायल होने के कारण बाद में शहीद हो गए।

मेजर गोसावी कुनाल मुनागीर ने अदम्य वीरता, अनुकरणीय नेतृत्व, अदम्य कर्तव्यनिष्ठा और अपने कर्तव्य के प्रति संपूर्ण निष्ठा निभाते हुए राष्ट्र हेतु सर्वोच्च बलिदान दिया।

11. 4578033वाई लांस नायक रघुबीर सिंह, दि महार रेजिमेन्ट / प्रथम बटालियन, दि राष्ट्रीय राईफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीख : 12 फरवरी 2017)

लांस नायक रघुबीर सिंह, फरवरी, 2017 में जम्मू और कश्मीर के कुलगाम में एक गांव में स्काउट और घेराबंदी तथा तलाशी ऑपरेशन करने वाली तलाशी टीम का हिस्सा थे।

तलाशी के दौरान जैसे ही दल लक्षित घर की छत पर पहुंचा, लांस नायक रघुबीर सिंह ने उनके गुप्त स्थल का भंडाफोड़ किया और अंदर गुप्त स्थान पर छिपे चार आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी।

लांस नायक रघुबीर सिंह ने अनुकरणीय सूझ-बूझ का प्रदर्शन करते हुए अपने दल को गोलियों की दिशा के बारे में चेतावनी दी और प्रत्यक्ष गोलीबारी में निड़रतापूर्वक आतंकवादियों का मुकाबला किया। अपने तलाशी दल के अन्य सदस्यों की रक्षा के लिए उन्होंने आतंकवादियों की गोलीयों का सामना करने में निःस्वार्थ रूप से स्वयं को झोंक दिया। गोलीबारी के दौरान वे गोली लगने से घायल हो गए। अपनी गंभीर घायलवस्था का ध्यान न रखते हुए इन्होंने सटीक गोलीबारी करते हुए अन्य आतंकवादियों को भागने से रोका और एक आतंकवादी को भी मार गिराया।

लांस नायक रघुबीर सिंह ने कर्तव्य निष्ठा से ऊपर उठकर साहसिक और वीरतापूर्ण कार्यों का प्रदर्शन किया और भारतीय सेना की सच्ची परम्पराओं के अनुरूप अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

12. 15687392डब्ल्यू लांस नायक बदोरीया गोपालसिंह मुनीमसिंह, सिगनल कोर, प्रथम बटालियन, दि राष्ट्रीय राईफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीख : 12 फरवरी 2017)

लांस नायक बदोरीया गोपालसिंह मुनीमसिंह, फरवरी, 2017 में जम्मू और कश्मीर के कुलगाम में एक गांव में स्काउट और घेराबंदी तथा तलाशी ऑपरेशन करने वाली तलाशी टीम का हिस्सा थे।

तलाशी के दौरान जैसे ही दल लक्षित घर की छत पर पहुंचा, लांस नायक बदोरीया गोपालसिंह मुनीमसिंह ने उनके गुप्त स्थल का भंडाफोड़ किया और अंदर गुप्त स्थान पर छिपे चार आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी।

लांस नायक बदोरीया गोपालसिंह मुनीमसिंह ने अनुकरणीय सूझ-बूझ का प्रदर्शन करते हुए अपने दल को गोलियों की दिशा के बारे में चेतावनी दी और प्रत्यक्ष गोलीबारी में निड़रतापूर्वक आतंकवादियों का मुकाबला किया। अपने तलाशी दल के अन्य सदस्यों की रक्षा के लिए उन्होंने आतंकवादियों की गोलियों का सामना करने में निःस्वार्थ रूप से स्वयं को झोंक दिया। गोलीबारी के दौरान वे गोली लगने से घायल हो गए। अपनी गंभीर घायलवस्था का ध्यान न रखते हुए इन्होंने सटीक गोलीबारी करते हुए अन्य आतंकवादियों को भागने से रोका और एक आतंकवादी को भी मार गिराया।

लांस नायक बदोरीया गोपालसिंह मुनीमसिंह ने कर्तव्य निष्ठा से ऊपर उठकर साहसिक और वीरतापूर्ण कार्यों का प्रदर्शन किया और भारतीय सेना की सच्ची परम्पराओं के अनुरूप अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

13. आईसी-71967एम मेजर सतीश दहिया, सेना सेवा कोर, 30वीं बटालियन दि राष्ट्रीय राईफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 फरवरी, 2017)

मेजर सतीश दहिया जम्मू और कश्मीर के बांदीपुर जिले के एक गांव में तीन विदेशी आतंकवादियों के मौजूद होने के बारे में संयुक्त आसूचना प्राप्त होने के आधार पर एक सर्च ऑपरेशन चला रहे थे। पूरी सतर्कता बरतते हुए उन्होंने संदिग्ध घर की घेराबंदी कर दी और स्वयं को उनके भागने वाले रास्ते पर तैनात कर लिया। भागने के प्रयास में मकान के भीतर से आतंकवादी अचानक बाहर आए

और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। निर्भीक मेजर सतीश दहिया ने डटकर आतंकवादियों का सामना किया और एक आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया। मेजर सतीश दहिया का खूंखारपन देखकर बाकी बचे हुए दो आतंकवादी छुप गए और आड़ लेते हुए फाइरिंग करते रहे। अपने जवानों की जान को खतरा देखते हुए वे बड़ी चतुराई से आतंकवादियों के नजदीक गए और समीप से उनकी घेराबंदी कर दी। निराश आतंकवादियों ने एक बार फिर घेरा तोड़कर भागने की कोशिश की। दोनों तरफ की गोलीबारी के दौरान मेजर सतीश दहिया को छाती में गोली लगी लेकिन गिरने से पहले उन्होंने एक और आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया। इस दौरान तीसरा आतंकवादी घायल अवस्था में घर की तरफ भाग गया। वहां से हटने से इंकार करते हुए मेजर सतीश दहिया ने घर के पास लगे हुए अपने जवानों को आदेश देना जारी रखा जिन्होंने घर के समीप जाकर तीसरे आतंकवादी को भी मार गिराया और बाद में वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

मेजर सतीश दहिया ने अपने शहीद होने तक इस पूरी संक्रिया में प्रेरणादायक नेतृत्व और वीरता का प्रदर्शन किया।

14. पीआईडी-036364 कांस्टेबल मंजूर अहमद नायक, जम्मू और कश्मीर पुलिस, 42वीं बटालियन, दि राष्ट्रीय राईफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीख : 04 मार्च, 2017)

कांस्टेबल मंजूर अहमद नायक जम्मू और कश्मीर पुलिस के विशेष ऑपरेशन समूह के जम्मू और कश्मीर के पुलवामा जिले में चल रहे संयुक्त ऑपरेशन का एक हिस्सा थे।

कांस्टेबल मंजूर अहमद नायक लक्षित मकान पर तात्कालिक विस्फोटक यंत्र (आईईडी) लगाने वाले दल का हिस्सा थे। जवान ने अपनी कुशलता और अदभुत साहस का परिचय देते हुए युक्तिपूर्वक आवरण का इस्तेमाल करते हुए तात्कालिक विस्फोटक यंत्र को लगाकर मकान को ध्वस्त कर दिया। इसके पश्चात वे पुनः स्वेच्छा से मकान का मलबा हटाकर जांच करने वाले संयुक्त दल का हिस्सा बने। उत्तम युद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए, वे जब शंका वाली जगह पर पहुंचे तब आतंकवादी ने उन पर अंधाधुंध गोलीबारी प्रारंभ कर दी। इन्होंने अदभुत साहस का परिचय देते हुए अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंकवादी को उलझा कर रखते हुए अपने दल को सुरक्षित बाहर निकाला। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वे लगातार गोलीबारी करते रहें और आतंकवादी को घायल कर दिया और अन्ततः अपनी गंभीर जख्मों के कारण प्राणों का बलिदान दिया।

कांस्टेबल मंजूर अहमद नायक ने बिल्कुल नजदीक से आतंकवादी से लड़ते हुए विशुद्ध धैर्य और निर्भीक कर्तव्य का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादी को घायल किया और राष्ट्र हेतु सर्वोच्च बलिदान देने से पूर्व जांच दल को सुरक्षित बाहर निकाला।

15. 2708834ए सिपाही आरिफ खान, दि ग्रेनेडियर रेजिमेन्ट, 55वीं बटालियन, दि राष्ट्रीय राईफल्स

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीख : 09 मार्च, 2017)

मार्च, 2017 में, जम्मू और कश्मीर के पुलवामा जिले के एक गांव में दो आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना प्राप्त हुई। एक अचंभित करने वाले कारक के रूप में छोटे दल के साथ प्रारंभिक घेरा बंदी करने का निर्णय लिया गया। सिपाही आरिफ खान प्रारंभिक घेराबंदी का हिस्सा थे।

लक्षित क्षेत्र के चारों ओर बुद्धिमत्ता से प्रारंभिक घेराबंदी में अचंभित और औचकपूर्ण वातावरण बनाया गया। इसी समय सिपाही आरिफ खान ने औचकता बनाए रखते हुए और अदम्य सतर्कता का परिचय देते हुए दो सिविलियनों की संदिग्ध गतिविधियों को देखा, जो खिड़की से कूद कर घेराबंदी से बचने का प्रयास कर रहे थे। सिपाही आरिफ खान ने अदम्य साहस और सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए उन्हें चुनौती दी। चुनौती दिए जाने पर संदिग्ध व्यक्तियों ने तुरंत सिपाही आरिफ खान पर गोलीबारी शुरू कर दी जिससे उनके आतंकवादी होने की पुष्टि हो गई। सिपाही आरिफ खान ने अदम्य साहस, अनुकरणीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए तुरंत आतंकवादी पर गोलीबारी प्रारंभ कर दी, तत्पश्चात एक आतंकवादी को वहीं ढेर कर दिया और दूसरे आतंकवादी को बचकर भागने से रोक दिया।

सिपाही आरिफ खान ने आतंकवादियों के खिलाफ तुरंत ऑपरेशन के दौरान अनुकरणीय साहस और सूझबूझ का परिचय दिया जिसके परिणामस्वरूप खूंखार आतंकवादी मारा गया।

16. 5250886एक्स लांस नायक दीपक आले, प्रथम बटालियन, तीसरी गोरखा राईफल्स

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीख : 09 अप्रैल, 2017)

लांस नायक दीपक आले, प्रथम बटालियन तीसरी गोरखा राईफल्स, अप्रैल, 2017 में जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के क्षेत्र में पोस्ट कमांडर की ड्यूटी कर रहे थे।

लांस नायक दीपक आले ने अपनी पोस्ट के आगे कुछ संदेहास्पद हरकत महसूस की और तुरंत अपनी आस-पास की पोस्टों को आगाह किया। इन्होंने तुरंत घुसपैठ-रोधी बाधा प्रणाली की ओर आतंकवादियों के पहुंच मार्ग का आकलन किया। वे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए रेंगते हुए बर्फीले उच्च तुंगता वाले अत्यंत दुर्गम भू-भाग में अतुलनीय गति के साथ आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गए, जो बाड़ को पार करने वाले थे। उन्होंने आतंकवादियों के अपने सटीक निशाने पर पहुंचने तक अपनी गोलीबारी को रोके रखा, तत्पश्चात स्वचालित बंदूक से सटीक और भारी गोलीबारी करते हुए दो आतंकवादियों को वहीं पर ढेर कर दिया।

दो आतंकवादियों को ढेर करने के उपरांत, लांस नायक दीपक आले पर आतंकवादियों के समूह द्वारा गोलीबारी करने के बावजूद वे उत्तम युद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए और 100 मीटर रेंगते हुए तुरंत कार्रवाई दल की सहायता के लिए महत्वपूर्ण स्थिति को संभालते हुए पहुंचे, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंनेतीसरे आतंकवादी को भी ढेर कर दिया। तत्पश्चात उन्होंने स्थिति की जागरूकता को दर्शाते हुए तुरंत चौथे आतंकवादी को देखा और उसे मार गिराने में सहायता की।

लांस नायक दीपक आले ने कर्तव्य निष्टा से ऊपर उठकर साहस, निःस्वार्थ समर्पण और वीरता का प्रदर्शन किया।

17. 15225911एक्स गनर ऋषि कुमार राय, तोपखाना रेजिमेन्ट/155 फील्ड रेजिमेन्ट

(पुरस्कार प्रभावी होने की तारीखः 27 अप्रैल, 2017)

गनर ऋषि कुमार राय, जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में तैनात थे।

अप्रैल, 2017 में आतंकवादियों ने पंचगांव गैरिजन पर हमला किया। गनर ऋषि कुमार राय इन पोस्टों में से एक पर संतरी थे। उन्होंने देखा की भारी अस्त्रों से लैस आतंकवादी अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए उनकी पोस्ट की तरफ बढ़ रहे हैं, उन्होंने अपनी गोलीबारी को तब तक रोके रखा जब तक वे उसके नजदीक नहीं पहुंच गए और फिर वे उनसे प्रभावपूर्ण ढंग से भिड़ गए। जब वे उन पर गोलीबारी कर रहे थे,तब उनके बुलैट प्रूफ पटके पर गोली आकर लगी किन्तु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की और आतंकवादियों से लड़ते रहे और तुरंत अपनी असाधारण वीरता का परिचय देते हुए तुरंत मरे हुए आतंकवादी का हथियार उठाकर तीसरे आतंकवादी से लड़ते रहे। इस प्रक्रिया के दौरान वे गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए किन्तु जब तक उन्हें सुरक्षित बाहर नहीं निकाला गया,इस दौरान वे लगातार तीसरे आतंकवादी पर गोलीबारी करते रहे।

गनर ऋषि कुमार राय ने अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए कर्तव्यनिष्ठा से ऊपर उठकर अद्वितीय सूझबूझ, असाधारण वीरता और साहस का प्रदर्शन किया।

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 95-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को असाधारण साहस के कार्यों हेतु "सेना मेडल/आर्मी मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. आईसी-61402एन कर्नल समरजीत राय, 4 गढ़वाल राईफल्स
2. आईसी-65751पी ले. कर्नल अरुणकुमार एम, 21 सिख रेजिमेंट
3. आईसी-64544डब्ल्यू मेजर अमित चमोली, कुमाऊँ, 50 राष्ट्रीय राईफल्स
4. आईसी-66326डब्ल्यू मेजर, भृगु राज जानी, गढ़वाल राईफल्स, 14 राष्ट्रीय राईफल्स
5. आईसी-68500डब्ल्यू मेजर वरुण मॉण्ड्डी, पंजाब, 22 राष्ट्रीय राईफल्स
6. आईसी-68757एफ मेजर सौरभ चौधरी, 2/5 गोरखा राईफल्स
7. आईसी-69813एफ मेजर सुनिल सिंह, कुमाऊँ, 13 राष्ट्रीय राईफल्स
8. आईसी-70536एन मेजर अभिजीत दियोरी, 20 डोगरा रेजिमेंट
9. आईसी-70597एल मेजर परिनय बंसल, सिख लाईट इन्फैंट्री, 19 राष्ट्रीय राईफल्स
10. आईसी-71085एल मेजर अनोग कुमार चंदा, आसाम, 35 राष्ट्रीय राईफल्स
11. आईसी-71390एक्स मेजर शेखर कुमार, ईएमई, 5 राष्ट्रीय राईफल्स
12. आईसी-71459डब्ल्यू मेजर मोहित ग्रेवाल, सेना सेवा कोर, 18 राष्ट्रीय राईफल्स
13. आईसी-71508एन मेजर आदित्य विक्रम सिंह, मैकेनाइज़्ड इन्फैंट्री, 13 असम राईफल्स

14. आईसी-71834डब्ल्यू मेजर दीपक कुमार उपाध्याय, शौर्य चक्र, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
15. आईसी-72543एच मेजर एस अरुण, जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स, 3 राष्ट्रीय राईफल्स
16. आईसी-72692डब्ल्यू मेजर रिशी आर, मैकेनाइज़्ड इन्फैंट्री, 42 राष्ट्रीय राईफल्स
17. आईसी-73258डब्ल्यू मेजर मलय बैद्या, कुमाऊँ, 13 राष्ट्रीय राईफल्स
18. आईसी-73515एच मेजर बिशाल सिंह थापा, कुमाऊँ, 13 राष्ट्रीय राईफल्स
19. आईसी-74906ए मेजर प्रदीप कुमार निगम, महार, 1 राष्ट्रीय राईफल्स
20. आईसी-75642डब्ल्यू मेजर मनीष कुमार यादव, इंजीनियर्स, 3 राष्ट्रीय राईफल्स
21. आईसी-75660वाई मेजर अंकित हरजाई, कवचित कोर, 22 राष्ट्रीय राईफल्स
22. एससी-00640के मेजर जसबीर सिंह, कविचत कोर, 38 असम राईफल्स
23. एसएस-42867वाई मेजर सुमीर सिंह, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
24. एसएस-45482एम मेजर पीयूष पाण्डे, इंजीनियर्स, 1 राष्ट्रीय राईफल्स
25. आईसी-77334पी कैप्टन प्रसून शर्मा, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
26. आईसी-78348एफ कैप्टन सरग्थेम श्याम, 2 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
27. आईसी-78817वाई कैप्टन मितेन्दर यादव, 21 महार रेजिमेंट
28. आईसी-79353वाई कैप्टन जयदीप रावत, 20 डोगरा रेजिमेंट
29. आईसी-80787एल कैप्टन जसदीप सिंह, 1/1 गोरखा राईफल्स
30. एसएस-44873एल कैप्टन मनोज मलिक, सेना वायु रक्षा कोर, 16 असम राईफल्स
31. एसएस-44990डब्ल्यू कैप्टन राकेश नायर, कवचित कोर, 22 राष्ट्रीय राईफल्स
32. एसएस-45306पी कैप्टन उमेश लांबा, 1 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
33. एसएस-47626एच कैप्टन अजीत लिम्बु, 1/5 गोरखा राईफल्स (आगामी बल)
34. जेसी-603041एम सूबेदार शीतल प्रसाद पुन, 1/1 गोरखा राईफल्स
35. जेसी-501049एल नायब सूबेदार वलविन्द्र सिंह, 22 सिख रेजिमेंट
36. जेसी-608107एफ नायब सूबेदार रवीन खंडाल, 1/3 गोरखा राईफल्स
37. 2486816एल हवलदार प्रदीप कुमार, 21 पंजाब रेजिमेंट
38. 4000066पी हवलदार मदन लाल, 20 डोगरा रेजिमेंट (मरणोपरांत)
39. 4076879वाई हवलदार बिजेन्द्रा लाल, 4 गढ़वाल राईफल्स
40. 4368172एल हवलदार एल पोंगचायी कोनयाक, आसाम रेजिमेंट, 35 राष्ट्रीय राईफल्स
41. 5046806एन हवलदार ड़मर बहादुर पुन, 4/1 गोरखा राईफल्स (मरणोपरांत)
42. 13760447एन हवलदार मोहम्मद हुसैन, 17 जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स
43. 13760972के हवलदार ईश्वर सिंह, जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स, 3 राष्ट्रीय राईफल्स
44. 13764171ए हवलदार अशोक कुमार, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
45. 3396369एफ लांस हवलदार दविन्दर सिंह, 17 सिख रेजिमेंट (मरणोपरांत)
46. 13623331एल लांस हवलदार राम कुमार, 20 डोगरा रेजिमेंट
47. 13764330एम लांस हवलदार रेशम सिंह, जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स, 52 राष्ट्रीय राईफल्स
48. 2804152एम नायक तुपारे राजेन्द्र नारायण, 22 मराठा लाईट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)
49. 3197436के नायक कुलदीप सिंह, 18 जाट रेजिमेंट
50. 3999686एल नायक राधा कृष्ण, डोगरा, 62 राष्ट्रीय राईफल्स

51. 4192682एफ नायक भगवान सिंह रौतेला, कुमाऊँ, 50 राष्ट्रीय राईफल्स
52. 4192720एम नायक प्रमोद कुमार कन्याल, कुमाऊँ, 13 राष्ट्रीय राईफल्स
53. 4195610एच नायक हरीश सिंह चुफाल, कुमाऊँ, 13 राष्ट्रीय राईफल्स
54. 4573939ए नायक रेवत सिंह, महार, 1 राष्ट्रीय राईफल्स
55. 4574373के नायक रामबीर सिंह राजपूत, महार, 30 राष्ट्रीय राईफल्स
56. 9108390एल नायक जावीद अहमद बट, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
57. 12984405एन नायक नसीर अहमद मीर, प्रादेशिक सेना, 163 इन्फैंट्री बटालियन (प्रादेशिक सेना) (एचएंडएच) सिख लाईट इन्फैंट्री
58. 13625978एक्स नायक नंदा प्रसाद, 4 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
59. 14932294वाई नायक दिलीप कुमार सिंह, मैकेनाइज़्ड इन्फैंट्री, 5 राष्ट्रीय राईफल्स
60. 15337560पी नायक चित्तारंजन देबबर्मा, 51 इंजीनियर रेजिमेंट (मरणोपरांत)
61. 2497303डब्ल्यू लांस नायक पंजाब सिंह, 21 पंजाब रेजिमेंट
62. 3004193एल लांस नायक हंस राम, 3 राजपूत रेजिमेंट
63. 4005617वाई लांस नायक राकेश कुमार, 20 डोगरा रेजिमेंट
64. 4084852डब्ल्यू लांस नायक सुखपाल सिंह, 4 गढ़वाल राईफल्स
65. 5049793एम लांस नायक लाल बहादुर थापा, 4/1 गोरखा राईफल्स (35 राष्ट्रीय राईफल्स से संबद्ध)
66. 5456130एक्स लांस नायक राजू क्षेत्री, 1/5 गोरखा राईफल्स (आगामी बल)
67. 15169808 एक्स लांस नायक सैखेडे सागर अशोक, तोपखाना रेजिमेंट, 13 राष्ट्रीय राईफल्स
68. 2503753एम सिपाही परमजीत, पंजाब, 54 राष्ट्रीय राईफल्स
69. 3007786एच सिपाही भाग सिंह, 3 राजपूत रेजिमेंट
70. 3010595वाई सिपाही पंकज सिंह, राजपूत, 44 राष्ट्रीय राईफल्स
71. 3200871एम सिपाही विशाल चौधरी, 18 जाट रेजिमेंट (मरणोपरांत)
72. 3202262एफ सिपाही बबलू सिंह, 18 जाट रेजिमेंट (मरणोपरांत)
73. 3209481एल सिपाही विकी, 18 जाट रेजिमेंट
74. 14848055वाई सिपाही अजोय सरकार, सेना सेवा कोर, 30 राष्ट्रीय राईफल्स
75. 14937791एम सिपाही नीरज कुमार, मैकेनाइज़्ड इन्फैंट्री, 35 राष्ट्रीय राईफल्स
76. 5050884एच राइफलमैन रबिन शर्मा, 4/1 गोरखा राईफल्स (मरणोपरांत)
77. 5251505एक्स राइफलमैन बेद सिंह राना,1/3 गोरखा राईफल्स
78. 13770563के राइफलमैन अंग्रेज सिंह, जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स, 52 राष्ट्रीय राईफल्स
79. 13770572एल राइफलमैन रवि कुमार, जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स, 31 राष्ट्रीय राईफल्स (मरणोपरांत)
80. 13777554एल राइफलमैन अभिनाश राई, 17 जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स
81. G/5006436डब्ल्यू राइफलमैन रूहितेश्वर चंगमई, 16 असम राईफल्स
82. G/5013646वाई राइफलमैन खम्पाई वॉग्सु, 13 असम राईफल्स (मरणोपरांत)
83. G/5016453के राइफलमैन अमरनाथ एस, 28 असम राईफल्स
84. 13776342एन पैराट्रूपर विक्रांत परिहार, 1 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
85. 4092134पी पैराट्रूपर जयवीर सिंह, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 96-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को असाधारण साहस के कार्यों हेतु ''नौसेना मेडल/नेवी मेडल'' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट पुष्पिन्दर त्यागी (07452-के)
2. जसकरन सिंह, चीफ मैक (122343-बी)
3. अज़हर अज़हरुद्दीन, सी मैन II सीडी III (237737-एन)

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 97-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को असाधारण साहस के कार्यों हेतु ''वायु सेना मेडल/एयरफोर्स मेडल'' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:-

1. विंग कमांडर सुभाष सिंह राव (25827) उड़ान (पायलट)
2. विंग कमांडर रविन्दर अहलावत (26300) उड़ान (पायलट)

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 98-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, रक्षा मंत्री द्वारा ''चीफ ऑफ द आर्मी स्टाफ'' से प्राप्त ''मैंशन इन डिस्पैचिज़'' हेतु निम्नलिखित अधिकारियों/कार्मिकों के नामों को भारत के राजपत्र में प्रकाशित करने हेतु आदेश प्रदान करते हैं :—

ऑपरेशन मेघदूत

1. आईसी-56202एन ले.कर्नल विजय कुमार बक्शी, 203 सेना विमानन स्क्वाड्रन (यूएच)
2. 5353456एन राइफलमैन अनुकेत गुरुंग, 1/4 गोरखा राईफल्स (मरणोपरांत)

ऑपरेशन रक्षक

1. आईसी-69755एच मेजर अक्षय गिरिश कुमार, 51 इंजीनियर रेजिमेंट (मरणोपरांत)
2. आईसी-71852वाई मेजर गौरव किन्हा, 57 इंजीनियर रेजिमेंट
3. आईसी-76379एच मेजर शक्ति सिंह, मैकेनाइज़्ड इन्फैंट्री, 42 राष्ट्रीय राईफल्स
4. आईसी-76411एम मेजर नरिन्दर सिंह, इंजीनियर, 53 राष्ट्रीय राईफल्स
5. आईसी-76147के कैप्टन वरुण कृष्णकुमार, तोपखाना रेजिमेंट, 52 राष्ट्रीय राईफल्स
6. एमएस-17667एक्स कैप्टन कुमार अरुण, सेना चिकित्सा कोर, 2 राजपूताना राईफल्स
7. जेसी-460005डब्ल्यू सूबेदार सालुंके संजय नरसिंह, 22 मराठा लाईट इन्फैंट्री
8. जेसी-480701पी सूबेदार बिजेन्द्र सिंह, 22 राजपूत रेजिमेंट
9. जेसी-282317एच नायब सूबेदार श्री राम, 284 फील्ड रेजिमेंट
10. जेसी-413848वाई नायब सूबेदार पदम सुब्बा, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
11. जेसी-413950एफ नायब सूबेदार बीरबल सिंह, पाराच्यूट रेजिमेंट, 31 राष्ट्रीय राईफल्स
12. जेसी-522357वाई नायब सूबेदार सहदेव सिंह, 20 डोगरा रेजिमेंट
13. जेसी-531945एन नायब सूबेदार बीरेन्द्र सिंह, 15 गढ़वाल राईफल्स
14. 3398304एम हवलदार बलदेव सिंह, 22 सिख रेजिमेंट
15. 3998858एच हवलदार अनिल कुमार, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
16. 5045851एन हवलदार गुन बहादुर काम्मु, 2/1 गोरखा राईफल्स
17. 13623902वाई हवलदार कोनतौजम इनोबा सिंह, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
18. 4482186एल नायक परमजीत सिंह, 8 -सिख लाईट इन्फैंट्री

19. 5754424एल नायक जुद्धा बीर थापा 3/8 गोरखा राईफल्स
20. 12974126पी नायक जावेद अहमद मलिक, 162 इन्फैंट्री प्रादेशिक सेना (जम्मू एंड कश्मीर लाईट इन्फैंट्री) 1 राष्ट्रीय राईफल्स से सम्बद्ध
21. 13624847ए नायक बसंत, 2 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
22. 13624854डब्ल्यू नायक अजय कुमार, 1 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
23. 13763924पी नायक संजीवन कुमार, 17 जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स
24. 16012707एम नायक बहादुर सिंह, 2 राजपूताना राईफल्स
25. 2503351पी सिपाही बिक्रमजीत सिंह, 21 पंजाब रेजिमेंट
26. 5050512एक्स राइफलमैन मिलन थापा, 4/1 गोरखा राईफल्स
27. 9112611के राइफलमैन बिलाल अहमद दर, जम्मू एंड कश्मीर लाईट इन्फैंट्री, 1 राष्ट्रीय राईफल्स
28. 13777667एन राइफलमैन संजय कुमार, 17 जम्मू एंड कश्मीर राईफल्स
29. 16019128एच राइफलमैन प्रदीप कुमार, 16 राजपूताना राईफल्स
30. 3013633पी पैराट्रूपर धर्मेन्द्र कुमार, पाराच्यूट रेजिमेंट, 31 राष्ट्रीय राईफल्स (मरणोपरांत)
31. 4377501एक्स पैराट्रूपर कालिग मोयोग, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
32. 13628508एक्स पैराट्रूपर इकबाल सिंह, सेना मैडल, 9 पाराच्यूट रेजिमेंट (विशेष बल)
33. 15199324एम गनर हर्षित भदोरिया, 1851 लाइट रेजिमेंट (मरणोपरांत)

ऑपरेशन आर्किड

1. आईसी-72362एक्स मेजर विकास पंघाल, सेना मैडल, कवचित कोर, 1 असम राईफल्स
2. आईसी-75190वाई मेजर राहुल शुक्ला, इंजीनियर्स, 13 असम राईफल्स
3. एसएस-46005एक्स मेजर विकाश सिंह, कवचित कोर, 5 असम राईफल्स
4. 2507941एल सिपाही मनप्रीत सिंह, 22 पंजाब रेजिमेंट (मरणोपरांत)

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

सं. 99-प्रेज/2017—राष्ट्रपति, रक्षा मंत्री द्वारा "चीफ ऑफ द एयर स्टाफ" से प्राप्त "मैंशन इन डिस्पैचिज़" हेतु निम्नलिखित अधिकारी/कार्मिक के नाम को भारत के राजपत्र में प्रकाशित करने हेतु आदेश प्रदान करते हैं :—

1. 924777-एल कार्पोरल शैलभ गौड़, भारतीय वायु सेना (सुरक्षा)

पी. प्रवीण सिद्धार्थ
विशेष कार्य अधिकारी

रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)
नई दिल्ली, दिनांक 13 अक्तूबर 2017
संकल्प

सं. हिंदी/समिति/2017/38/5––रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) ने 07.09.2015एवं 17.09.2015 के संकल्प सं. हिंदी/समिति/2014/38/2 के अंतर्गत गठित रेलवे हिंदी सलाहकार समिति को तत्काल प्रभाव से भंग करने का विनिश्चय किया है।

आर. के वर्मा
सचिव

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

के. पी. सत्यानंदन
निदेशक, राजभाषा

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 2017

No. 93-Pres/2017—The President is pleased to approve the award of the "Kirti Chakra" to the under mentioned person for the acts of most conspicuous gallantry :—

1. SHRI PRAMOD KUMAR, COMMANDANT, 49 Bn, CRPF (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 15 August, 2016)

Observing the days of National importance in the Kashmir Valley brings new challenges to the Security Forces as the anti-national forces make all out efforts to disrupt the celebrations. The celebration of Independence Day' 2016, turned out to be more challenging due to highly volatile and vulnerable Law & Order situation in the Valley in the aftermath of the killing of a "Hizbul Mujahedeen" Commander by SF's. To ward off disruptions and thwart the nefarious designs of militants, Srinagar city was kept under strict vigil and restrictions were imposed.

But, at about 0800 hours, militants hiding in an abandoned building at Nowhatta Chowk, Srinagar opened indiscriminate fire at the troops of 28 Bn, CRPF deployed in the area. The sudden and surprise attack from a tactically advantageous and dominating position proved fatal for the troops and 7 personnel sustained bullet injuries. Despite sustaining injuries, troops took positions behind available covers, fired back at the militants and did not give them a chance to escape. As the fierce encounter in the heart of the city took place, the news of the incident reached to all concerned offices of the CRPF. Hearing the news of encounter, Shri Pramod Kumar, Commandant, 49 Battalion acted swiftly and promptly rushed towards the incident site to help the beleaguered troops and neutralize the militants. After reaching close to the incident site, he first ensured the evacuation of the injured amid heavy gunfire and replaced them with fresh troops. In the process of evacuation, he came under intense gunfire but kept maneuvering his vehicle from one injured to other. Thereafter, he along with other operational commanders tactically analyzed the operational/ground situation and lay seize around the building from where the militants were firing.

Once all the escape routes were plugged, Shri Pramod Kumar along with his troops reached close to the building in bullet proof vehicles and got engaged in a fierce gunfight. The militants were often changing their positions and firing from different windows making the troops fail to understand their number. The concrete walls behind which the militants had occupied secured positions were also rendering the fire of the troops, ineffective. To gain the desired location from where he could rain effective fire on militants, Shri Pramod Kumar manoeuvred his vehicle amid raining bullets and in the process reached a place, close to the hideout, from where he could just see the lower body part of a militant. On getting the desired position he fired an aimed shot at the militant, before the militant could change his position, and inflicted injury on his legs. Though the injury incapacitated the movement of the militant but the intensity of fire from his side did not decrease. To neutralize the militant, Shri Pramod Kumar took a brave decision of stepping out of the vehicle, without caring for his personal safety and throwing all precautions in air, with an intention to gain a more appropriate angle to aim at the body of the militant. While zeroing in towards the target, unmindful of the gunshots all around him, the valiant officer ignored the monumental risk of capturing the attention of second militant towards him. As he fired upon the injured militant, aiming his body, and inflicted more injury to him, a bullet fired by second militant pierced his skull. The brave officer lay severely injured on the ground and was immediately evacuated to 92 Army Base Hospital, B.B. Cantt, Srinagar where he breathed his last and sacrificed his life in service of the nation.

As the operation resumed after the evacuation, only the second militant was found to be firing and was subsequently neutralized by the troops. Two AK-47 rifles along with 6 magazines were also recovered from the possession of slain militants.

Shri Pramod Kumar, Commandant, 49 Battalion displayed the rare act of conspicuous gallantry, exemplary courage, utmost dedication/ devotion to duty and sacrificed his own life in the process.

2. SHRI CHETAN KUMAR CHEETA, COMMANDANT, 45 Bn, CRPF

(Effective date of the award : 14 February, 2017)

On 13 February 2017, Shri Chetan Kumar Cheeta, Commandant, 45 Bn, CRPF received an intelligence input from SSP Bandipora about the presence of two LeT Foreign militants in Parry Mohalla, Hajin under PS-Hajin, Distt Bandipora, J&K. Based on the intelligence, an operation was planned jointly by Shri Chetan Kumar Cheeta, Commandant, 45 Bn CRPF, CO 13 RR, and SDPO, Sumbal. It was decided that troops of 13 RR will lay the initial cordon and Commandant 45 Bn, CRPF along with his troops of CO 13 RR will carry out the assault on hidden militants. Accordingly, on 14/02/2017 at 0500 hrs, a Cordon and Search Operation was launched by troops of C, D Coys and QAT of 45 Bn CRPF under the overall command of Shri Chetan Kumar Cheeta and SOG, J&K Police Bandipora, in Parray Mohalla, Hajin.

Since the input of the presence of two foreign militants was very reliable,

Commandant 45 Bn and CO 13 RR decided to check and ensure that cordon of the 03 suspected target houses was well laid and all escape routes were plugged to make it water tight to prevent any possible slip out of militants. While the above team was strengthening the cordon, the militants, sensing the presence of SFs in close vicinity, got alerted and prepared for the plausible confrontation. Militants observed the area for any possible escape, but, they couldn't find it. The dejected militants finding no option, due to being surrounded by, decided to challenge the troops. They rolled out from suspected target house firing indiscriminately and lobbing grenades upon the cordon party. The sudden and pestilent attack dazzled the troops and forced them to take shelter behind the covers. The opportunity was encashed by the militants as they broke the inner cordon and took shelter in an adjacent house.

The initial multi-pronged strike left 04 personnel including an army officer injured. The injury to the cordon party and evacuation process created a big void in the inner cordon. To overcome from the situation, CO 13 RR asked for reinforcement from Commandant, 45 Bn CRPF to evacuate the injured personnel and cover the gaps in the inner cordon. Sensing that the situation was extremely grave and warranted extraordinary efforts, Shri Chetan Kumar Cheeta himself went ahead with his buddy and troops from RR to strengthen the cordon and to provide the much-needed support to the troops.

Displaying his tactical acumen and raw courage Shri Cheeta along with his team moved tactically and stealthily towards the target house following the dead ground and under lit areas. Ignoring the inherent potential threats, Shri Chetan Kumar Cheeta led his team from the front to place himself and his party to fill the gaps created due to injured personnel. While advancing towards the target, Shri Chetan Kumar Cheeta spotted a militant behind a hay stack in the compound; preparing for another deadly attack on the troops. He was well aware that there was another militant whose position was still unknown. There was every possibility that opening fire at the militant from his position would expose him, jeopardizing the safety of his fellow troops. In a split moment, he sprang out of his position and unmindful of the extreme perils that lay ahead of him, putting duty before self, charged at the militant firing precisely with his weapon and succeeded in neutralizing the militant positioned behind the haystack. Meanwhile, the fatal eventuality came across the troops as the other militant who was hiding in one of the suspected houses showered a barrage of bullets towards Shri Cheeta and his team followed by the carpeting of UBGL shells. Shri Chetan Kumar Cheeta and his fellow men; troops from RR, sustained several gunshot wounds and splinter injuries.

Severely wounded Shri Chetan Kumar Cheeta displaying exemplary bravery, raw courage, exceptional leadership qualities and indomitable fighting spirit in the face of clear and imminent death continued to goad the troops to retaliate and himself kept firing at the militant preventing any further loss to own troops, albeit, the militant managed to escape taking advantage of the situation and support of the local populace. Later, the slain terrorist was identified as the dreaded LeT 'A' category terrorist Abu Harris. Troops recovered 1 AK Rifle with 04 magazines and 71 rounds of ammunition and a hand grenade from the slain terrorist.

During the operation, Shri Chetan Kumar Cheeta, Commandant, displayed exception leadership qualities, raw grit and moral courage risking his own life in neutralizing the dreaded terrorist before he could cause further fatalities to his fellow troops. Undaunted to the pestilent attack by the second terrorist, and, despite being severely wounded he stood his ground and continued to fire leaving the terrorist with no option but to flee. Shri Chetan Kumar Cheeta emplaced indelible example of chivalry, the spirit of selfless sacrifice and sterling qualities of a leader.

3. 5047602N HAVILDAR GIRIS GURUNG, FOURTH BATTALION THE FIRST GORKHA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 20 May, 2017)

In May 2017, Havildar Giris Gurung was the search team commander deployed in Kupwara District of Jammu and Kashmir. While he was leading the search along a steep slope with dense foliage and vegetation, a militant hiding in this area fired at him and he was hit on his thigh.

Though bleeding profusely, the Non Commissioned Officer realizing the grave threat to his team and with utter disregard to his personal safety moved to flank and assaulted the location thereby eliminating the militant with an accurate burst from his AK-47. Thereon, he identified the location of another militant who was firing towards his team. Though being grievously injured, he lobbed a grenade in that direction and displaying supreme bravery charged at the hidden militant and fired at him thereby eliminating him at extreme close quarters, though he later succumbed to his injuries.

Havildar Giris Gurung displayed selfless conspicuous courage under fire and an unmatched aggressive spirit before making the supreme sacrifice

4. IC-73531A MAJOR PREETAM SINGH KUNWAR, 4TH BATTALION THE GARHWAL RIFLES

(Effective date of the award : 26 May, 2017)

Major Preetam Singh Kunwar developed an outstanding intelligence network confirming movement of militants across Line of Control at Baramulla district of Jammu and Kashmir. With impeccable ingenuity, he moved inside thick minefields by creating an improvised Infantry Safe Lane in concealed position. The inclement weather necessitated robust physical and mental endurance.

In May 2017, on spotting six militants, he evolved instantaneous plan displaying great tactical acumen and waited patiently for all militants to come into the killing zone to engage them from close range. He opened accurate fire at opportune moment combining courage and maturity taking all militants by surprise. Suddenly, two of the militants hide behind boulder and brought down heavy volume of fire with hand grenades and UBGLs, one of which exploded near him. Impervious of own safety, the officer crawled along wooden log and lobbed hand grenades towards the militants resulting in their instant killing. Suddenly one militant started climbing in opposite direction towards party of Commanding Officer. Upon noticing, Major Preetam alerted the Commanding Officer and changed his position. Amidst heavy volume of fire he brought aimed fire on climbing militant killing him instantly.

Major Preetam Singh Kunwar displayed exemplary courage, determination under odds, conspicuous gallantry in face of the enemy, bravery of highest order and unflinching fortitude.

5. SS-43887Y MAJOR DAVID MANLUN, THE NAGA REGIMENT, 164 INFANTRY BATTALION (TERRITORIAL ARMY) (HOME & HEARTH) NAGA (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 06 Jun, 2017)

Based on a specific intelligence developed by Major David Manlun, an operation was launched in Northern Nagaland in June 2017. During the said operation at around 2200 hrs, contact with a group of militants was established by the column under Major David Manlun.

A fierce firefight ensued immediately, wherein the militants lobbed grenades towards the position of Major David Manlun injuring him and three other ranks. Despite bearing the brunt of militant’s fire and grenade blast Major David Manlun with utter disregard to his personal safety moved forward and opened fire from close range to pin down the militants, thus preventing them from causing further casualty to own troops and eliminated three militants. Major David Manlun succumbed to his injuries shortly thereafter. The killed militants were hardcore cadres of ULFA(I) and were involved in numerous incidents of violence in Upper Assam.

Major David Manlun displayed conspicuous personal bravery and leadership of the highest order and made supreme sacrifice in fighting with the militants.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 94-pres/2017—The President is pleased to approve the award of the “Shaurya Chakra” to the under mentioned persons for the acts of gallantry:-

1. SHRI CHANDAN KUMAR, ASSISTANT COMMANDANT (IRLA : 9056), CRPF

(Effective date of the award : 08 January 2016)

An operation was planned to be conducted in forest area of village Bhaluahi, Gopaldera, Morma, Kachnar, Chhuchiya and Dulare under PS Dhibra and Dumariya, Distts:- Aurangabad and Gaya as there had been information about presence of a group of maoists in the area. The operation was meticulously planned by Shri Rabish Kumar Singh, Commandant, 205 CoBRA and to ensure completely discreet operation only two teams one under command of Shri Chandan Kumar, Assistant Commmandant and other under the command of Shri Gufran Ahmad, Assistant Commandant along with a small component of local police were launched in the area on 07.01.2016.

After collecting latest updates on probable location of maoists, the teams left Bhaluhai camp in the dead of night. Both teams moved towards the target area, circumventing the early warning system of maoist, under the cover of darkness and thick vegetation maintaining utmost secrecy and surprise. At first light, the teams started combing the jungle but contact with maoists was not established. After searching the enemy for the whole day, teams halted at a strategic position and kept an eye over the activities around. The strategy of the teams worked to expectations, when, at around 1715 hrs., it noticed rising of smoke at an adjacent hillock. Shri Chandan Kumar, Assistant Commandant, suspecting the likely presence of maoists, immediately called his junior commanders through field signals and prepared a plan to cover the suspected area from all directions and launch an assault.

As per plan, Shri Gufran Ahmad, Assistant Commandant led a small team to cover the area from North direction, another small team moved to cover from South direction while Shri Chandan Kumar led a small team of intrepid Troopers from South-West direction. The tactical positioning of maoists was not the only difficulty the troops were to face but were also required to race against time due to fading light. Shri Chandan Kumar comprehending the possiblity of slipping-off of the maoists under cover of darkness signaled his bunch of troops to hurry the advance towards the top. But the maoists were also ready to retaliate on the slightest suspicion of unwanted presence in the area. The swift movement due to fading light made troops susceptible to exposure and as was expected, the maoists on noticing the team of Shri Chandan Kumar

unleashed a volley of fire at it. It was at that juncture of grave and certain danger of becoming casualties when Shri Chandan Kumar, without caring for the bullets of enemy, decided for a frontal and headlong advance straight in the enemy's line of fire.

At the first step of advance Head Constable Nagendra Prasad was hit and injured with a bullet hitting his shoulder. But Shri Chandan Kumar signaled his troops with determination to continue to advance. As the team made a further dash towards the enemy position, Shri Chandan Kumar and Constable Amarnath Mishra came face to face to a sentry post. The presence of troops at a close distance unnerved the two maoist positioned inside the post. In a bid to escape, they opened heavy and indiscriminate fire at the commander and his buddy to intimidate them and tried to escape from the area. But in an unprecedented and audacious and also a courageous move the two, without caring for the bullets aimed at them, dashed close to the maoists and gunned them down. The Maoists in turn intensified their fire, coupled with lobbing of grenades, to stop the further advance of the troops and make good its escape. He ordered the other teams at rear to advance towards the enemy positions and open fire, even though his own small team was very close to the enemy positions. Finding themselves cornered by the converging troops, the maoists got divided into small groups and tried to flee in different directions with their guns firing heavily.

But keeping control over their nerves, Shri Chandan Kumar, Assistant Commandant and Shri Amarnath Mishra, Constable, CRPF continued their advance and maneuvered ahead by ignoring heavy fire and insufficient cover. Their lives again came under more severe threat when two of the maoists made a bid to flee towards their direction while firing heavily at them, but the duo, ignoring the bullets being fired at them, immediately flung into action, jumped to their sides fired and injured the maoists. The injured maoists them changed their direction and rushed back into the thick jungle.

The fierce gunfight continued for some more time till the darkness had totally settled in the area. The troops remained positioned in the area throughout the night and in the morning thorough search of the area was carried out in which dead bodies of four Maoists namely 1. Rajiv Yadav @ Bihari (Regional Committee Member) 2. Ramratan Yadav @ Jagdish Ji @ Jayant Yadav (Zonal Commander) 3. Devki Bharti (Area Commander) and 4. Birendra @ Ravindra Bhokta (Fighter Member) along with one AK-47 Rifle, one Carbine, one .303. Rifle, one Country made Gun, 299 rounds of ammunitions, six Magazines, three Can bombs, 40 numbers of Detonators, two Wireless sets and other incriminating and camping materials were recovered.

Shri Chandan Kumar exhibited exemplary courage, leadership qualities and selfless devotion to the duty during the instant operation against Maoists.

2. SHRI AMAR NATH MISHRA, CONSTABLE, CRPF

(Effective date of the award : 08 January, 2016)

An operation was planned to be conducted in forest area of village Bhaluahi, Gopaldera, Morma, Kachnar, Chhuchiya and Dulare under PS Dhibra and Dumariya, Distts:- Aurangabad and Gaya as there had been information about presence of a group of maoists in the area. The operation was meticulously planned by Shri Rabish Kumar Singh, Commandant, 205 CoBRA and to ensure completely discreet operation only two teams one under command of Shri Chandan Kumar, Assistant Commandant and other under the command of Shri Gufran Ahmad, Assistant Commmandant along with a small component of local police were launched in the area on 07.01.2016.

After collecting latest updates on probable location of maoists, the teams left Bhaluhai camp in the dead of night. Both teams moved towards the target area, circumventing the early warning system of maoist, under the cover of darkness and thick vegetation maintaining utmost secrecy and surprise. At first light, the teams started combing the jungle but contact with maoists was not established. After searching the enemy for the whole day, teams halted at a strategic position and kept an eye over the activities around. The strategy of the teams worked to expectations, when, at around 1715 hrs., it noticed rising of smoke at an adjacent hillock. Shri Chandan Kumar, Assistant Commandant, suspecting the likely presence of maoists, immediately called his junior commanders through field signals and prepared a plan to cover the suspected area from all directions and launch an assault.

As per plan, Shri Gufran Ahmad, Assistant Commandant led a small team to cover the area from North direction, another small team moved to cover from South direction while Shri Chandan Kumar led a small team of intrepid Troopers from South-West direction. The tactical positioning of maoists was not the only difficulty the troops were to face but were also required to race against time due to fading light. Shri Chandan Kumar comprehending the possibility of slipping-off of the maoists under cover of darkness signaled his bunch of troops to hurry the advance towards the top. But the maoists were also ready to retaliate on the slightest suspicion of unwanted presence in the area. The swift movement due to fading light made troops susceptible to exposure and as was expected, the maoists on noticing the team of Shri Chandan Kumar unleashed a volley of fire at it. It was at that juncture of grave and certain danger of becoming casualties when Shri Chandan Kumar, without caring for the bullets of enemy, decided for a frontal and headlong advance straight in the enemy's line of fire.

At the first step of advance Head Constable Nagendra Prasad was hit and injured with a bullet hitting his shoulder. But Shri Chandan Kumar signaled his troops with determination to continue to advance. As the team made a further dash towards the enemy position, Shri Chandan Kumar and Constable Amarnath Mishra came face to face to a sentry post. The presence of troops at a close distance unnerved the two maoist positioned inside the post. In a bid to escape, they opened heavy and indiscriminate fire at the commander and his buddy to intimidate them and tried to escape from the area. But in an unprecedented and audacious and also a courageous move the two, without caring for the bullets aimed at them, dashed close to the maoists and gunned them down. The Maoists in turn intensified their fire, coupled with lobbing of grenades, to stop the further advance of the troops and make good its escape. He ordered the other teams at rear to advance towards the enemy positions and open fire, even though his own small team was very close to the enemy positions. Finding themselves cornered by the converging troops, the maoists got divided into small groups and tried to flee in different directions with their guns firing heavily.

But keeping control over their nerves, Shri Chandan Kumar, Assistant Commandant and Shri Amarnath Mishra, Constable CRPF continued their advance and maneuvered ahead by ignoring heavy fire and insufficient cover. Their lives again came under more severe threat when two of the maoists made a bid to flee towards their direction while firing heavily at them, but the duo, ignoring the bullets being fired at them, immediately flung into action, jumped to their sides fired and injured the maoists. The injured maoists them changed their direction and rushed back into the thick jungle.

The fierce gunfight continued for some more time till the darkness had totally settled in the area. The troops remained positioned in the area throughout the night and in the morning thorough search of the area was carried out in which dead bodies of four Maoists namely 1. Rajiv Yadav @ Bihari (Regional Committee Member) 2. Ramratan Yadav @ Jagdish Ji @ Jayant Yadav (Zonal Commander) 3. Devki Bharti (Area Commander) and 4. Birendra @ Ravindra Bhokta (Fighter Member) along with one AK-47 Rifle, one Carbine, one .303 Rifle, one Country made Gun, 299 rounds of ammunitions, six Magazines, three Can bombs, 40 numbers of Detonators, two Wireless sets and other incriminating and camping materials were recovered.

Shri Amar Nath Mishra exhibited exemplary courage and selfless devotion to the duty during the instant Maoists operation.

3. 13767992A LANCE NAIK KASHMIR SINGH, 17TH BN THE JAMMU AND KASHMIR RIFLES

(Effective date of the award : 15 August, 2016)

In August 2016, Lance Naik Kashmir Singh was part of the column mobilised to eliminate infiltrating militants. The column spotted two militants in an area in Baramulla District of Jammu and Kashmir. Further closing in initiated fierce gun fight wherein militants engaged own column with heavy small arms and Under Barrel Grenade Launcher fire.

In the ensuing firefight, Lance Naik Kashmir Singh sustained serious splinter injury. However, with complete disregard to personal safety and displaying indomitable courage, he continued to advance from cover to cover while continuously engaging the militants thereby preventing further damage to own troops. In daring display of devotion beyond the call of duty, he further closed in and shot one militant dead from close range. He thereafter occupied tactically advantageous position to seal the escape route of second militant while continuously engaging him thereby allowing encircling from another direction, ultimately leading to his neutralisation.

Lance Naik Kashmir Singh displayed definitive tactical prowess and gallantry despite being seriously injured, ensuring elimination of two hardcore militants thereby preventing a high profile militant strike on Independence Day.

4. JC-580725N SUBEDAR SHABIR AHMED, 17TH BATTALION THE JAMMU AND KASHMIR RIFLES

(Effective date of the award : 15 August, 2016)

In August 2016, Subedar Ahmed received input concerning militants movement. He immediately analyzed the information, swiftly planned and mobilized his column with lightning speed to intercept the infiltrating militants.

The Column spotted militants in an area in District Baramulla of Jammu and Kashmir leading to the fierce gun fight during which militants tried to escape. He immediately took control of the operation by alerting all neighboring posts, tactically deploying his column, rushing from stop to stop continuously readjusting their positions to ensure effective sealing of all escape routes. At 0640h, displaying raw nerve and exemplary initiative, he crawled from cover to cover under heavy accurate militant fire and shot one militant dead. Subsequently, he occupied a tactically advantageous position to effectively intercept the escaping militants and shot him dead at close range in fierce gun battle.

Subedar Ahmed displayed tremendous tactical acumen, exceptional leadership and bravery which prevented high profile militants strike on Independence Day.

5. JC-414170P NAIB SUBEDAR SURENDRA SINGH, 4TH BATTALION THE PARACHUTE REGIMENT (SPECIAL FORCE)

(Effective date of the award : 19 August, 2016)

In August 2016, a breach in the Anti Infiltration Obstacle System in an area in Kupwara District of Jammu & Kashmir was observed and additional reinforcements were immediately requisitioned to the contact site. The JCO was Second-in-Command of this party. For next few days, these troops kept tracking the militants. Almost five days later, three militants fired upon an Ammunition Point and fled, critically injuring three soldiers. After appreciating escape routes, the search party moved to track and eliminate these fleeing militants.

The move of these militants was detected towards the forested area. During the search of the Baikhs, the militants tried to escape firing indiscriminately towards the search party. Without losing time and with utter disregard to his personal safety, Naib Subedar Surendra Singh ran to initiate contact with two fleeing militants. Naib Subedar Surendra Singh displaying exceptional tactical acumen, rushed towards the boulders where militants had taken cover and were firing indiscriminately. Militants lobbed two hand grenades towards him as he was approaching them. Naib Subedar Surendra Singh, remained unnerved and closed in towards the militants. This audacious move of Naib Subedar Surendra Singh made the militants panic and they started firing indiscriminately at him. Assessing the location of the militants, he moved from the flanks and ran over a higher boulder and came directly on top of the two militants and shot one of them at a close quarter range of 05 meters. Seeing this move the second militant shifted behind adjoin boulder and started firing and lobed a hand grenade towards Naib Subedar Surendra Singh. Naib Subedar Surendra Singh showing heroic initiative, unparallel display of tactical acumen inched closer to the militant and shot him down at very close quarters.

Naib Subedar Surendra Singh displayed raw courage, selflessness, intrepidity at the risk of his life above and beyond the call of duty under hostile situation and difficult terrain.

6. 2616368W SEPOY VENKATARAO ABOTULA, 8TH BATTALION THE MADRAS REGIMENT

(Effective date of the award : 06 October, 2016)

In October 2016, Sepoy Venkatarao Abotula was on night sentry duty at post in an Army Camp in Kupwara District of Jammu and Kashmir.

During the morning hours, he observed suspicious movement 25-30 meters outside double layered perimeter fence and alerted his buddy sentry Sepoy Ajoy Sarkar who also noticed and confirmed suspicious movement. He immediately alerted the Guard Commander and balance guard sleeping in the adjacent guard resting bunker while Sepoy Ajoy Sarkar kept strict vigil towards suspects. He returned to the post and challenged the two suspicious individuals attempting to close in towards the barbed wire fence. On being challenged, the militants opened indiscriminate fire. Maintaining composure and undeterred under fire, he immediately retaliated with accurate fire pinning down the militants outside the fence. The exchange of fire continued and the militants were grievously wounded. Despite injuries, the militants continued to accurately engage the sentry post. Unmindful of grave risk to his life, he continued to engage the militants, firing through the loop hole and killed one militant.

Sepoy Venkatarao Abotula’s gallant, bold and swift actions prevented a sneak attack and resulted in elimination of all three foreign militants.

7. SHRI P. TRINADHA RAO, ASSISTANT ASSAULT COMMANDER, ANDHRA PRADESH

(Effective date of the award : 24 October, 2016)

On credible information that large member of Maoists from Andhra Odisha Border Special Zonal Committee (AOBSZC) gathered in the cut-off area of Andhra Odisha Border (AOB) with an intention to unleash violence against the State, three Assault Units of Greyhounds with representatives of local Police and SIB were deployed for operations in the evening of 23.10.2016. The teams trekked cross country through very difficult and inhospitable terrain covering highly Maoist infested villages en-route for more than 26 Km overnight, braving land mines and possible Maoist ambushes and reached the outskirts of Ramgurha village on 24.10.2016 by 6 am.

A group of Commandos on reaching the forested hilly area on the northern side of Ramgurha village were spotted by the Maoist sentries and were fired upon with automatic and semi-automatic weapons. Though, they came under heavy and continuous fire, the GreyHounds team advanced without caring for their lives and approached the enemy location. They neutralized two Maoists after a fierce gun battle and continued to chase about 60 – 70 Maoists though outnumbered manifold.

Assistant Assault Commander (AAC 3413) Sri P.Trinadha Rao with a small group of Commandos crossed the Nala though they were coming under intense fire from the Maoists. They noticed 20 – 25 Maoists running towards Ramgurha village. He and his team stemmed the advance of the Maoists and chased them back towards the hillock. The Maoists started climbing the hillock and assumed a secure and dominant position. They launched an avalanche of fire at the GreyHounds Commandos and hurled Hand Grenades. AAC Sri P.Trinadha Rao received bullet injuries but remained undaunted. His true

leadership qualities came to the fore when he led his team from the forefront risking his life. He exhorted his team members to advance from cover to cover, when the Maoists were firing from behind a boulder, he led a small team and proceeded to the right flank and neutralized the Maoists.

Assistant Assault Commander (AAC) Sri P.Trinadha Rao and his sub-group neutralized three Maoists and forced the other Maoists to descend the hillock on the Southern and South-Eastern sides. Later the killed Maoists were identified as (1) Bakuri Venkata Ramana @ Ganesh, Special Zonal Committee Member (SZCM), (2) Prudhvi @ Munna, District Committee Member (DCM) and (3) Budri, Area Committee Member (ACM) and (1) AK-47 rifle, (1) SLR and (1) Pistol were recovered from the scene of incident. Due to the exemplary courage and presence of mind exhibited by AAC P. Trinadha Rao, the other Commandos had the time to reorganize themselves and covered the exit routes of the Maoists on Eastern and Southern sides. Meanwhile, Senior Commando (SC) 5966 Shri Chikkam G.V. Ramachandra Rao sensed that the Maoists would escape from the Southern and Eastern sides of the hillock, he assumed leadership role and quickly ran from the western side of the hillock to the eastern side while coming under intense fire from the Maoists. He covered more than 1 Km through thick forest without minding the grave risk to his own life. SC Shri Chikkam G.V. Ramachandra Rao moved from place to place on the Eastern side and fired upon the Maoists giving the impression that the Commandos were present everywhere. The Maoists were forced to approach the exit route on the Southern side of the hillock due to the retaliatory fire from SC Shri Chikkam G.V. Ramachandra Rao and his associates.

As the Junior Commando (JC) Shri D. Satheesh Kumar was hit by a bullet in his thigh and become incapacitated, SC Shri Chikkam G.V. Ramachandra Rao entrusted the care of his colleague to JC Shri D.Hari Kiran and continued to fight with more determination and kept the Maoists at bay with his controlled and tactical firing. When he found an opportunity to inflict large scale damage to the Maoists, he fired two shells from his UBGL. This resulted in neutralizing five Maoist Cadres and injuring several others.

Subsequently, when it was noticed that one of the Grey Hounds Commandos SC 8708 Shri Md. Abubakar, lost his life after jumping into a Nala while chasing the Maoists. SC Shri Chikkam G.V. Ramachandra Rao once again took great risk, jumped into the deep Nala and fished out dead body of Shri Md. Abubakar along with a weapon.

AAC Shri P.Trinadha Rao exhibited extraordinary commitment and valour and but for his timely action, the Maoists could have easily escaped to other side of the hillock. He led by personal example, instilled confidence in his team members and exhorted them to climb up the hill. His actions were absolutely beyond the level of normal duty.

8. SHRI CHIKKAM G.V. RAMACHANDRA RAO, SENIOR COMMANDO (5966), ANDHRA PRADESH

(Effective date of the award : 24 October, 2016)

On credible information that large member of Maoists from Andhra Odisha Border Special Zonal Committee (AOBSZC) gathered in the cut-off area of Andhra Odisha Border (AOB) with an intention to unleash violence against the State, three Assault Units of Greyhounds with representatives of local Police and SIB were deployed for operations in the evening of 23.10.2016. The team's trekked cross country through very difficult and inhospitable terrain covering highly Maoist infested villages en-route for more than 26 Km overnight, braving land mines and possible Maoist ambushes and reached the outskirts of Ramgurha village on 24.10.2016 by 6 am.

A group of Commandos on reaching the forested hilly area on the northern side of Ramgurha village were spotted by the Maoist sentries and were fired upon with automatic and semi-automatic weapons. Though, they came under heavy and continuous fire, the GreyHounds team advanced without caring for their lives and approached the enemy location. They neutralized two Maoists after a fierce gun battle and continued to chase about 60 – 70 Maoists though outnumbered manifold.

Assistant Assault Commander (AAC 3413) Shri P.Trinadha Rao with a small group of Commandos crossed the Nala though they were coming under intense fire from the Maoists. They noticed 20 – 25 Maoists running towards Ramgurha village. He and his team stemmed the advance of the Maoists and chased them back towards the hillock. The Maoists started climbing the hillock and assumed a secure and dominant position. They launched an avalanche of fire at the GreyHounds Commandos and hurled Hand Grenades. AAC Sri P.Trinadha Rao received bullet injuries but remained undaunted. His true leadership qualities came to the fore when he led his team from the forefront risking his life. He exhorted his team members to advance from cover to cover, when the Maoists were firing from behind a boulder, he led a small team and proceeded to the right flank and neutralized the Maoists.

Assistant Assault Commander (AAC) Shri P.Trinadha Rao and his sub-group neutralized three Maoists and forced the other Maoists to descend the hillock on the Southern and South-Eastern sides. Later the killed Maoists were identified as (1) Bakur iVenkata Ramana @ Ganesh, Special Zonal Committee Member (SZCM), (2) Prudhvi @ Munna, District Committee Member (DCM) and (3) Budri, Area Committee Member (ACM) and (1) AK-47 rifle, (1) SLR and (1) Pistol were recovered from the scene of incident. Due to the exemplary courage and presence of mind exhibited by AAC P.Trinadha Rao, the other Commandos had the time to reorganize themselves and covered the exit routes of the Maoists on Eastern and Southern sides. Meanwhile, Senior Commando (SC) 5966 Shri Chikkam G.V. Ramachandra Rao sensed that the Maoists would escape from the Southern and Eastern sides of the hillock, he assumed leadership role and quickly ran from

the western side of the hillock to the eastern side while coming under intense fire from the Maoists. He covered more than 1 Km through thick forest without minding the grave risk to his own life. SC Shri Chikkam G. V. Ramachandra Rao moved from place to place on the Eastern side and fired upon the Maoists giving the impression that the Commandos were present everywhere. The Maoists were forced to approach the exit route on the Southern side of the hillock due to the retaliatory fire from SC Shri Chikkam G. V. Ramachandra Rao and his associates.

As the Junior Commando (JC) Shri D. Satheesh Kumar was hit by a bullet in his thigh and become incapacitated, SC Shri Chikkam G. V. Ramachandra Rao entrusted the care of his colleague to JC Shri D.Hari Kiran and continued to fight with more determination and kept the Maoists at bay with his controlled and tactical firing. When he found an opportunity to inflict large scale damage to the Maoists, he fired two shells from his UBGL. This resulted in neutralizing five Maoist Cadres and injuring several others.

Subsequently, when it was noticed that one of the Greyhounds Commandos SC 8708 Shri Md. Abubakar, lost his life after jumping into a Nala while chasing the Maoists. SC Shri Chikkam G.V. Ramachandra Rao once again took great risk, jumped into the deep Nala and fished out dead body of Shri Md. Abubakar along with a weapon.

SC Shri Chikkam G.V. Ramachandra Rao showed tremendous courage in the face of heavy odds and acted beyond the normal call of duty. He covered more than 1 Km around the hillock, assumed responsibility, took care of the injured colleague and played a major role in neutralizing the Maoist attack. But for him, the Maoists could have managed to escape and also carry away some of their injured colleagues.

9. 4188533W NAIK CHANDRA SINGH, KUMAON SCOUTS, 13TH BATTALION THE RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 25 November, 2016)

In November 2016, Naik Chandra Singh was part of stop group during a Cordon and Search Operation in a village in Sopore District of Jammu and Kashmir.

The Company had cordoned the target house in which two militants were holed up. Militants brought down heavy volume of fire including grenade fire on the stops and attempted to escape. One militant ran towards the direction where Naik Chandra Singh was deployed. Firing his weapon, the militants charged towards Naik Chandra Singh and tried to break the cordon. Naik Chandra Singh was grievously wounded in the abdomen in the exchange of fire. However, realizing that the militant could pose grave danger to his colleagues, Naik Chandra Singh, unmindful of his personal safety, continued to engage the heavily armed militant and neutralised him. This gallant, selfless action ensured safety of other troops, as well as elimination of a dreaded militant. Naik Chandra Singh later succumbed to his injuries at the operation site.

Naik Chandra Singh displayed act of bravery and made supreme sacrifice while performing a gallant act beyond the call of duty.

10. SS-42717H MAJOR GOSAVI KUNAL MUNNAGIR, REGIMENT OF ARTILLERY 166TH BATTALION THE MEDIUM REGIMENT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 29 November, 2016)

In November 2016 Major Gosavi Kunal Munnagir leading his Quick Reaction Team swiftly responded to the militants attack in an Army base in Nagrota District of Jammu and Kashmir. On reaching the incident site, he came to know that two officers including a five months pregnant woman officer were trapped in a double storied complex. He displayed quick decision making and raw courage to quickly deploy his team and extricated the officers with total disregard to his personal safety under heavy fire from the militants.

Despite heavy fire by militants, the officer closed in the area and successfully rescued both the officers, one injured Junior Commissioned Officer and three Other Ranks.

In the ensuing fierce gun battle at very close quarters, the officer was grievously injured. Despite injuries, he continued to pin down the militants till he was evacuated. Even while being evacuated, he continued to inform the location of militants. He later succumbed to his injuries.

Major Gosavi Kunal Munnagir displayed unmatched valour, exemplary leadership, indomitable spirit and highest degree of dedication to his duty before making supreme sacrifice for the nation.

11. 4578033Y LANCE NAIK RAGHUBEER SINGH, THE MAHAR REGIMENTS, 1ST BATTALION THE RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12 February, 2017)

In February 2017 Lance Naik Raghubeer Singh was a scout and part of search team of a Cordon and Search Operation in a village in Kulgam District of Jammu and Kashmir.

During the search, as the team reached the top floor of the target house, Lance Naik Raghubeer Singh busted a hideout and heavy volume of militant fire was drawn from four militants trapped inside.

Lance Naik Raghubeer Singh exhibited exemplary presence of mind to warn his team of the direction of fire and faced militants fearlessly in a direct firefight. He selflessly put himself in the face of indiscriminate militants fire at close range to protect other members of the search team. During the firefight the individual sustained bullet injuries himself. Undeterred from the grave injuries he brought down effective fire on the militants, eliminated one of them and also prevented other militants from escaping.

Lance Naik Raghubeer Singh displayed act of courage and gallantry beyond the call of duty and made supreme sacrifice of his life in true traditions of the Indian Army.

12. 15687392W L/NK BHANDORIYA GOPALSINH MUNIMSINH THE CORPS OF SIGNALS, 1ST BATTALION THE RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 12 February, 2017)

In February 2017, Lance Naik Bhandoriya Gopalsinh Munimsinh was a scout and part of search team of ongoing Cordon and Search Operation in a Village in Kulgam, District of Jammu and Kashmir.

During the search, as the team reached the top floor of the target house, Lance Naik Bhandoriya Gopalsinh Munimsinh busted a hideout and heavy volume of militants fire was drawn from the four militants trapped inside.

Lance Naik Bhandoriya Gopalsinh Munimsinh exhibited exemplary presence of mind to warn his team of the direction of fire and faced militants fearlessly in a direct firefight. He selflessly put himself in the face of indiscriminate militants fire at close range to protect other members of search team. During the firefight, the individual sustained bullet injuries himself. Undeterred from the grave injuries, he brought down effective fire on the militants and eliminated one of them and also prevented other militant from escaping.

Lance Naik Bhandoriya Gopalsinh Munimsinh displayed act of courage and gallantry beyond the call of duty and made supreme sacrifice of his life in true traditions of the Indian Army.

13. IC-71967M MAJOR SATISH DAHIYA, ARMY SERVICE CORPS, 30TH BATTALION THE RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: 14 February, 2017)

In February 2017, Major Satish Dahiya was executing a search operation based on painstakingly collated intelligence about presence of collated intelligence about presence of three foreign militants in a village in District Bandipur of Jammu and Kashmir. Maintaining complete surprise, he isolated the suspected house by putting a tight cordon, placing himself at the likely escape route. In an attempt to escape, the holed up militants suddenly rushed out, firing indiscriminately. Undeterred, Major Satish Dahiya engaged them and personally eliminated one militant. Seeing the ferocity of his retaliation, remaining two militants hid themselves using folds of ground and continued to fire. Realising imminent danger to his troops, he swiftly closed in and seized initiative by engaging them from a flank.The militants attempted to break out one again in desperation. In this exchange of fire, Major Satish Dahiya was on his chest but killed the second militant before falling down. Third militant, also injured in this fire fight ran towards the house. Refusing evacuation, Major Satish Dahiya continued to direct his men who closed in towards the house and eliminated the third militant. The officer later succumbed to his injuries.

Major Satish Dahiya displayed his inspirational leadership and gallantry throughout this operation till his martyrdom.

14. PID-036364 CONST MANZOOR AHMAD NAIK, JAMMU & KASHMIR POLICE, 42ND BATTALION THE RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 04 March, 2017)

Constable Manzoor Ahmed Naik of the Special Operation Group of Jammu and Kashmir Police was part of a joint operation in Pulwama District of Jammu and Kashmir.

Constable Manzoor Ahmed Naik was part of team tasked to place the Improvised Explosive Device (IED) on the target house. The individual displayed raw courage and nerves of steel and using tactical blanket placed the Improvised Explosive Device demolition of the house. The individual again volunteered to be part of joint search team tasked to clear the debris. Displaying excellent field craft, he closed in to the suspected site when the militant opened indiscriminate fire. In an exemplary display of valour and unmindful of personal safety he engaged the militant at close range allowing the search team to extricate safely. Despite being gravely injured he continued firing thereby injuring the militant and ultimately succumbed to his injuries.

Constable Manzoor Ahmed Naik displayed sheer grit and unflinching devotion to duty in engaging the militant at close quarters thereby injuring the militant and providing safe extrication of the search party before making supreme sacrifice for the nation.

15. 2708834A SEP ARIF KHAN, THE GRENADIERS REGIMENT, 55TH BATTALION THE RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award : 09 March, 2017)

In March 2017, an input regarding presence of two militants in a particular house in a village in Pulwama District of Jammu and Kashmir was received. As a surprise factor, it was decided to lay an initial cordon with small party. Sepoy Arif Khan was part of the initial cordon.

Keeping surprise and deception, initial cordon around the target area was laid discreetly. At this moment Sepoy Arif Khan maintaining surprise and displaying high state of alertness observed suspicious movement of two civilians, who jumped out of the window and were trying to escape the cordon. Sepoy Arif Khan displaying exemplary courage and presence of mind immediately challenged them. On being challenged the suspicious personnels immediately opened fire towards Sepoy Arif Khan thereby confirming their identity as militants. Sepoy Arif Khan showing nerves of steel, exemplary courage and with utter disregard to personal safety, fired back immediately towards the militants thereby eliminating one militant on the spot and preventing the escape of another militant.

Sepoy Arif Khan displayed exemplary courage and presence of mind during the instant operation against militants, resulting in elimination of one hardcore militant.

16. 5250886X LANCE NAIK DEEPAK ALE, IST BATTLAION, THE 3RD GORKHA RIFLES

(Effective date of the award : 09 April, 2017)

In April 2017 Lance Naik Deepak Ale, 1st Battalion the 3rd Gorkha Rifles was discharging duties of a Post Commander in an area of Kupwara district of Jammu and Kashmir.

Lance Naik Deepak Ale noticed suspicious movement ahead of his post and alerted his neighbouring posts. He quickly assessed the approach route of militants towards the Anti Infiltration Obstacle System. Displaying utter disregard to his personal safety, he crawled with incredible speed in inhospitable snow bound high altitude terrain to close in with the militants, who were about to cross the fence. He controlled his fire till the militants reached killing ground and thereafter with accurate and heavy volume of automatic fire eliminated two militants on the spot.

After eliminating two militants, Lance Naik Deepak Ale despite being pinned down by covering group of militants displayed excellent field craft and crawled 100 meters to assist Quick Reaction Team to occupy position of tactical advantage which resulted in elimination of the third militant. Subsequently, he displayed situational awareness and was quick to spot the fourth militant and facilitated his elimination by indicating his exact location.

Lance Naik Deepak Ale displayed courage, selfless devotion and gallantry beyond the call of duty.

17. 15225911X GUNNER RISHI KUMAR RAY, REGIMENT OF ARTILLERY/155 FIELD REGIMENT

(Effective date of the award : 27 April, 2017)

Gunner Rishi Kumar Ray was deployed in Kupwara district of Jammu and Kashmir.

In April 2017, Panzgam Garrison was attacked by militants. Gunner Rishi Kumar Ray was sentry at one of the posts. On noticing the heavily armed militants, firing indiscriminately and approaching his post, he held back his fire till they were in close range and effectively engaged them. He was fired upon and received a burst on his bullet proof patka but unflinched he continued to engage the militants and immediately demonstrated exceptional bravery by rushing out to pick up the weapon of a slain militant to engage the third militant. In the process he suffered grievous gunshot wounds but he continued to engage the third militant till he was evacuated to safety.

Gunner Rishi Kumar Ray displayed unparalleled presence of mind, exceptional bravery and gallantry beyond the call of duty with utter disregard to his personal safety.

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 95 -Pres/2017—The President is pleased to approve the award of the “Sena Medal/Army Medal” to the under mentioned personnel for the acts of exceptional courage :—

1. IC-61402N COLONEL SAMARJIT RAY, 4 GARH RIF
2. IC-65751P LT COL ARUNKUMAR M, 21 SIKH REGT
3. IC-64544W MAJ AMIT CHAMOLI, KUMAON, 50 RR
4. IC-66326W MAJ BHRAGU RAJ JANI, GARH RIF, 14 RR
5. IC-68500W MAJ VARUN MAANDI, PUNJAB, 22 RR

6. IC-68757F MAJ SAURABH CHAUDHURY, 2/5 GR
7. IC-69813F MAJ SUNIL SINGH, KUMAON, 13 RR
8. IC-70536N MAJ ABHIJIT DEORI, 20 DOGRA
9. IC-70597L MAJ PARINAY BANSAL, SIKH LI, 19 RR
10. IC-71085L MAJ ANOGH KUMAR CHANDA, ASSAM, 35 RR
11. IC-71390X MAJ SEKHAR KUMAR, EME, 5 RR
12. IC-71459W MAJ MOHIT GREWAL, ASC, 18 RR
13. IC-71508N MAJ ADITYA VIKRAM SINGH, MECH INF, 13 AR
14. IC-71834W MAJ DEEPAK KUMAR UPADHYAY, SC, 9 PARA (SF)
15. IC-72543H MAJ S ARUN, JAK RIF, 3 RR
16. IC-72692W MAJ RISHI R, MECH INF, 42 RR
17. IC-73258W MAJ MALAY BAIDYA, KUMAON, 13 RR
18. IC-73515H MAJ BISHAL SINGH THAPA, KUMAON, 13 RR
19. IC-74906A MAJ PRADEEP KUMAR NIGAM, MAHAR, 1 RR
20. IC-75642W MAJ MANISH KUMAR YADAV, ENGRS, 3 RR
21. IC-75660Y MAJ ANKIT HARJAI, ARMD, 22 RR
22. SC-00640K MAJ JASBIR SINGH, ARMD, 38 AR
23. SS-42867Y MAJ SUMEER SINGH, 9 PARA (SF)
24. SS-45482M MAJ PEEYOOSH PANDEY, ENGRS, 1 RR
25. IC-77334P CAPT PRASOON SHARMA, 9 PARA (SF)
26. IC-78348F CAPT SARANGTHEM SHYAM, 2 PARA (SF)
27. IC-78817Y CAPT MITENDER YADAV, 21 MAHAR
28. IC-79353Y CAPT JAIDEEP RAWAT, 20 DOGRA
29. IC-80787L CAPT JASDEEP SINGH, 1/1 GR
30. SS-44873L CAPT MANOJ MALIK, AAD, 16 AR
31. SS-44990W CAPT RAKESH NAIR, ARMD, 22 RR
32. SS-45306P CAPT UMESH LAMBA, 1 PARA (SF)
33. SS-47626H CAPT AJIT LIMBU, 1/5 GR (FF)
34. JC-603041M SUB SHITAL PRASAD PUNN, 1/1 GR
35. JC-501049L NB SUB BALWINDER SINGH, 22 SIKH
36. JC-608107F NAIB SUBEDAR RAVIN KHANDAL, 1/3 GR
37. 2486816L HAV PRADEEP KUMAR, 21 PUNJAB
38. 4000066P HAV MADAN LAL, 20 DOGRA (POSTHUMOUS)
39. 4076879Y HAVILDAR BRIJENDRA LAL, 4 GARH RIF
40. 4368172L HAV L PONGCHAI KONYAK, ASSAM, 35 RR
41. 5046806N HAVILDAR DAMAR BAHADUR PUN, 4/1 GR (POSTHUMOUS)
42. 13760447N HAV MOHD HUSSAIN, 17 JAK RIF
43. 13760972K HAV ISHWAR SINGH, JAK RIF, 3 RR
44. 13764171A HAV ASHOK KUMAR, 9 PARA (SF)
45. 3396369F L/HAV DAVINDER SINGH, 17 SIKH (POSTHUMOUS)
46. 13623331L L/HAV RAM KUMAR, 20 DOGRA

47. 13764330M L/HAV RAISHAM SINGH, JAK RIF, 52 RR
48. 2804152M NK TUPARE RAJENDRA NARAYAN, 22 MLI (POSTHUMOUS)
49. 3197436K NK KULDEEP SINGH, 18 JAT
50. 3999686L NK RADHA KRISHAN, DOGRA, 62 RR
51. 4192682F NK BHAGWAN SINGH RAUTELA, KUMAON, 50 RR
52. 4192720M NK PRAMOD KUMAR KANYAL, KUMAON, 13 RR
53. 4195610H NK HARISH SINGH CHUPHAL, KUMAON, 13 RR
54. 4573939A NK REVAT SINGH, MAHAR, 1 RR
55. 4574373K NK RAMBEER SINGH RAJPUT, MAHAR, 30 RR
56. 9108390L NK JAWEED AHMAD BHAT, 9 PARA (SF)
57. 12984405N NK NASEER AHMAD MIR, TA, 163 INF BN (TA) (H&H) SIKH LI
58. 13625978X NK NANDA PRASAD, 4 PARA (SF)
59. 14932294Y NK DILEEP KUMAR SINGH, MECH INF, 5 RR
60. 15337560P NK CHITTARANJAN DEBBARMA, 51 ENGR REGT (POSTHUMOUS)
61. 2497303W L/NK PANJAB SINGH, 21 PUNJAB
62. 3004193L L/NK HANS RAM, 3 RAJPUT
63. 4005617Y L/NK RAKESH KUMAR, 20 DOGRA
64. 4084852W LANCE NAIK SUKHPAL SINGH, 4 GARH RIF
65. 5049793M L/NK LAL BAHADUR THAPA, 4/1 GR (ATT WITH 35 RR)
66. 5456130X L/NK RAJU CHETRY, 1/5 GR (FF)
67. 15169808X L/NK SAIKHEDE SAGAR ASHOK, ARTY, 13 RR
68. 2503753M SEP PARAMJEET, PUNJAB, 53 RR
69. 3007786H SEP BHAG SINGH, 3 RAJPUT
70. 3010595Y SEP PANKAJ SINGH, RAJPUT, 44 RR
71. 3200871M SEP VISHAL CHAUDHARI, 18 JAT (POSTHUMOUS)
72. 3202262F SEP BABALOO SINGH, 18 JAT (POSTHUMOUS)
73. 3209481L SEP VICKY, 18 JAT
74. 14848055Y SEP AJOY SARKAR, ASC, 30 RR
75. 14937791M SEP NEERAJ KUMAR, MECH INF, 35 RR
76. 5050884H RFN RABIN SHARMA, 4/1 GR (POSTHUMOUS)
77. 5251505X RFN BED SINGH RANA, 1/3 GR
78. 13770563K RFN ANGRAZ SINGH, JAK RIF, 52 RR
79. 13770572L RFN RAVI KUMAR, JAK RIF, 31 RR (POSTHUMOUS)
80. 13777554L RFN ABHINASH RAI, 17 JAK RIF
81. G/5006436W RFN RUHITESWAR CHANGMAI, 16 AR
82. G/5013646Y RFN KHAMPAI WANGSU, 13 AR (POSTHUMOUS)
83. G/5016453K RFN AMARNATH S, 28 AR
84. 4092134P PTR JAYVEER SINGH, 9 PARA (SF)13776342N PTR VIKRANT PARIHAR, 1 PARA (SF)
85. 13776342N PTR VIKRANT PARIHAR, 1 PARA (SF)

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 96-Pres/2017—The President is pleased to approve the award of the "Nao Sena Medal/Navy Medal" to the under mentioned personnel for the acts of exceptional courage :—

1. LT PUSHPINDER TYAGI (07452-K)
2. JASKARAN SINGH, CHIEF MECH (122343-B)
3. AZHAR AZHARUDDIN, SEA II CD III (237737-N)

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 97-Pres/2017—The President is pleased to approve the award of the "Vayu Sena Medal/Air Force Medal" to the under mentioned personnel for the acts of exceptional courage :—

1. WING COMMANDER SUBHASH SINGH RAO (25827) FLYING (PILOT)
2. WING COMMANDER RAVINDER AHLAWAT (26300) FLYING (PILOT)

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 98–Pres/2017—The President is pleased to give orders for publication in the Gazette of India of the names of the under mentioned officers/personnel for "Mention in Despatches" received by the Raksha Mantri from the "Chief of the Army Staff" :—

OPERATION MEGHDOOT

1. IC-56202N LT COL VIJAY KUMAR BAKSHI, 203 ARMY AVN SQN (UH)
2. 5353456N RFN ANUKET GURUNG, 1/4 GR(POSTHUMOUS)

OPERATION RAKSHAK

1. IC-69755H MAJ AKSHAY GIRISH KUMAR, 51 ENGR REGT (POSTHUMOUS)
2. IC-71852Y MAJ GAURAV KINHA, 57 ENGR REGT
3. IC-76379H MAJ SHAKTI SINGH, MECH INF, 42 RR
4. IC-76411M MAJ NARINDER SINGH, ENGRS, 53 RR
5. IC-76147K CAPT VARUN KRISHNAKUMAR, ARTY, 52 RR
6. MS-17667X CAPT KUMAR ARUN, AMC, 2 RAJ RIF
7. JC-460005W SUB SALUNKE SANJAY NARASING, 22 MARATHA LI
8. JC-480701P SUB BRIJENDAR SINGH, 22 RAJPUT
9. JC-282317H NB SUB SHRI RAM, 284 FD REGT
10. JC-413848Y NB SUB PADAM SUBBA, 9 PARA (SF)
11. JC-413950F NB SUB BIRBAL SINGH, PARA, 31 RR
12. JC-522357Y NB SUB SAHDEV SINGH, 20 DOGRA
13. JC-531945N NB SUB BEERENDRA SINGH, 15 GARH RIF
14. 3398304M HAV BALDEV SINGH, 22 SIKH
15. 3998858H HAV ANIL KUMAR, 9 PARA (SF)
16. 5045851N HAV GUN BAHADUR KAMMU, 2/1 GR
17. 13623902Y HAV KONTHOUJAM INAOBA SINGH, 9 PARA (SF)
18. 4482186L NK PARAMJEET SINGH, 8 SIKH LI
19. 5754424L NAIK JUDDHA BIR THAPA, 3/8 GR
20. 12974126P NK JAVID AHMAD MALIK, 162 INF TA (JAK LI) ATT WITH 1 RR
21. 13624847A NK BASANT, 2 PARA (SF)
22. 13624854W NK AJAY KUMAR, 1 PARA (SF)
23. 13763924P NK SANJEEVAN KUMAR, 17 JAK RIF
24. 16012707M NK BAHADUR SINGH, 2 RAJ RIF
25. 2503351P SEP BIKRAMJIT SINGH, 21 PUNJAB
26. 5050512X RFN MILAN THAPA, 4/1 GR
27. 9112611K RFN BILAL AHMAD DAR, JAK LI, 1 RR
28. 13777667N RFN SANJAY KUMAR, 17 JAK RIF
29. 16019128H RFN PRADEEP KUMAR, 16 RAJ RIF
30. 3013633P PTR DHARMENDRA KUMAR, PARA, 31 RR (POSTHUMOUS)

31. 4377501X PTR KALING MOYONG, 9 PARA (SF)
32. 13628508X PTR IQBAL SINGH, SM, 9 PARA (SF)
33. 15199324M GNR HARSIT BHADORIYA, 1851 LT REGT (POSTHUMOUS)

OPERATION ORCHID

1. IC-72362X MAJ VIKAS PANGHAL, SM, ARMD, 1 AR
2. IC-75190Y MAJ RAHUL SHUKLA, ENGRS, 13 AR
3. SS-46005X MAJ VIKASH SINGH, ARMD, 5 AR
4. 2507941L SEP MANPREET SINGH, 22 PUNJAB (POSTHUMOUS)

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

No. 99-Pres/2017—The President is pleased to give orders for publication in the Gazette of India of the name of the undermentioned officer/personnel for "Mention in Despatches" received by the Raksha Mantri from the "Chief of the Air Staff" :—

1. 924777-L CORPORAL SHAILABH GAUR INDIAN AIR FORCE (SECURITY)

P. PRAVEEN SIDDHARTH
Officer on Special Duty

MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BOARD)

New Delhi, the 13th October 2017

RESOLUTION

No. Hindi/Samiti/2017/38/5—Ministry of Railways (Railway Board) have decided to dissolve with immediate effect the Railway Hindi Salahakar Samiti constituted under Ministry of Railways (Railway Board)'s Resolution No. Hindi/Samiti/2014/38/2 dated 07.09.2015 and 17.09.2015.

R. K. VERMA
Secretary

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. P. SATHYANANDAN
Director (OL)

मुद्रण निदेशालय द्वारा, भारत सरकार मुद्रणालय, एन.आई.टी. फरीदाबाद में अपलोड एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा ई–प्रकाशित, 2017
UPLOADED BY DIRECTORATE OF PRINTING AT GOVERNMENT OF INDIA PRESS, N.I.T. FARIDABAD AND E-PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2017

www.dop.nic.in

LAZAR SAGAYA RAJ
Digitally signed by LAZAR SAGAYA RAJ
Date: 2017.11.04 11:26:42 +05'30'